विस्फोटक भविष्य में कलीसिया की अगुवाई

अगुवाई करना सीखना

नवअगुवों का प्रशिक्षण

Dynamic Churches
International

अतिरिक्त प्रतियों व जानकारी हेतु, सम्पर्क करें:
रेव्ह. पीटर कासुंग
निदेशक
लीडरशिप ट्रेनिंग सेन्टर
बाबूबासा, देवदंगा, चम्पासरी, पोस्ट ऑफिस - आंचल-734003,
सिलीगुड़ी, पश्चिम बंगाल, भारत

Publisher:
Dynamic Churches International
164 Stonegate Close, Airdrie, Alberta, Canada, T4B 2V2 (403) 912-4438
Email: dcimiddleton@shaw.ca **Website:** www.dynamicchurches.org

© 2008 Dynamic Churches International
All rights reserved. No part of this publication may be copied or reproduced in any form without written permission. Permission is given to copy forms in this book for personal use only.

Printed by Devtech Publishers and Printers Pvt. Ltd.
Email: devtech_printers@sify.com

विषय सूची

	पृष्ठ
शिक्षा सामग्री का अगुवाई में कैसे प्रयोग करें	1
परिचय	5
सत्र एक- स्वागत	7
• जाँच सूची	7
• उद्देश्य तथा कार्य वर्णन	9
• जीवन समूहों के पाँच प्रमुख उद्देश्य	13
• अच्छे विभाजनात्मक प्रश्नों को कैसे पूछें	15
सत्र दो- वचन	19
• जाँच सूची	19
• छोटे समूह क्यों?	21
• वचन- बाइबल अध्ययन सहायता करता है	25
सत्र तीन- आराधना और प्रार्थना	35
• जाँच सूची	35
• परमेश्वर का सेवक होना	37
• सार्थक समूह- प्रार्थना को कैसे प्राप्त करें	41
सत्र चार- जीत	46
• जाँच सूची	46
• एक सेवक अगुवे का दिल	48
• लोग-लोगों तक पहुँच रहे हैं	52
• हानि के लिये कैसे प्रार्थना करें	54
सत्र पाँच- विजय	56
• जाँच सूची	56
• हमारे जीवन-समूह को पुनः उत्पन्न करना	58
• अपने शिक्षक का चयन करना	61
• जीतना- अपने संसार के लिए एक दर्शन	62
• जीतना- जीवन-पद्धति के स्वरूप में कैसे गवाही हो	5
सत्र छः- कार्य (सेवा)	68
• जाँच सूची	68
• एक सुरक्षित वातावरण का निर्माण करना	70
• उन अगुवों को स्थापित करना जो दूसरों को शिक्षा और प्रशिक्षण देंगे	72
• आत्मिक वरदानों की खोज	74
उपलब्धियों का प्रमाण-पत्र	91

नवअगुवों की अगुवाई करना

प्रशिक्षण का प्रयोग कैसे करें

यह सत्र आपकी, हमारे जीवन समूह की पाँच मुख्य बातों को सीखने में सहायता करेगा। इन शिक्षाओं का निर्माण समूह अगुवों द्वारा अपने (पुरुष/स्त्री) नव अगुवों को प्रशिक्षित करने के लिए किया गया है।

नव अगुवे निम्नलिखित कार्य करें:

- अगुवे के साथ मिलकर सभा से पहले अध्ययन व तैयारी करें (साधारणत: प्रतिमाह एक घण्टे के लिए)
- एक साथ मिलकर वह पाठ्यक्रम पर चर्चा करें और निश्चय करें कि आपकी समझ व तालमेल स्पष्ट हो।
- जितने भी सिद्धान्त इस सत्र में सीखे जाते हैं वह आने वाले सप्ताह में छोटे समूह में इस्तेमाल किये जायें। इनमें से बहुत से सिद्धान्त सामान्य तौर पर समूह में इस्तेमाल किये जाएंगे। कुछ सिद्धान्तों का निर्माण समूह में शिक्षा देने के लिए किया गया है। या तो आपको समूह में अपना समय देना होगा या बाइबल अध्ययन समय का इस्तेमाल इन बाइबल की सच्चाइयों को सिखाने के लिए करना होगा।

निम्नलिखित दर्शाता है कि किस तरह से एक नवअगुवा लोगों का निर्माण करने वाली रणनीति में संलग्न होता है।

लोगों का निर्माण करने वाली रणनीति

कार्य	जीवन समूह	अगुवा व नवअगुवा	प्रशिक्षक व अगुवा
1. स्वागत गीत गाना, प्रार्थना व स्तुति	एक दूसरे से जान पहचान करें	मित्रता बढ़ाना	कलीसिया व समाज के प्रति बोझ को बाँटना
2. अराधना गीत गाना, प्रार्थना व स्तुति	परमेश्वर की अराधना करें व एक दूसरे तथा बिना उद्धार पाये मित्र के लिए प्रार्थना करें	परमेश्वर की अराधना करें, समूह के सदस्य एक दूसरे की बढ़ौत्तरी व दूसरों तक वचन पहुँचने के लिए प्रार्थना करें	परमेश्वर की अराधना करें तथा प्रार्थना करें कि नवअगुवा नये समूह को प्रारम्भ कर सके।

कार्य	जीवन समूह	अगुवा व नवअगुवा	प्रशिक्षक व अगुवा
3. जीतना दूसरों तक पहुँचना	मसीह का प्रचार करना सीखें, नये लोगों तक पहुँचने के लिए प्रार्थना करें।	समूह के सदस्यों को गैर मसीहियों में प्रचार करने के लिए तैयार करें व प्रार्थना करें	प्रचार कार्यक्रम का आयोजन-समूह व कलीसियाई तौर पर
4. वचन सीखें/बाइबल अध्ययन 'योग्यता प्रशिक्षण'	मसीही जीवन कैसे जिएं	किस प्रकार से हम अपने समूह को बढ़ायें और पुन: उत्पादन करें।	आपके समूह की अगुवाई कैसे करनी है
5. कार्य सेवा/अगुवों का निर्माण ● **एक से एक को**	सामर्थी आधार सामर्थी शिष्यता	सामर्थी वक्तव्य में अगुवाई करना सीखें	अपने समूह की अगुवाई करना
● **छोटा समूह** एक समूह के रूप में एक साथ	छोटे समूह का समय	विस्फोटक वृद्धि शिष्य-निर्माणकारी प्रक्रिया कार्यशाला व वार्षिक सम्मेलन	विस्फोटक वृद्धि शिष्य निर्माणकारी प्रक्रिया व वार्षिक सम्मेलन

लोगों का निर्माण करने हेतु सम्पूर्ण रणनीति

कार्य	जीवन समूह	अगुवा व नवअगुवा	प्रशिक्षक व अगुवा	पासबान व प्रशिक्षक	कलीसिया से कलीसिया को प्रशिक्षण
1. स्वागत प्रेम बाँटना	एक दूसरे से जान पहचान करें	**मित्रता बढ़ाना**	कलीसिया व समाज के प्रति बोझ को बाँटना	लोगों तक पहुँचने के लिए सेवकाई के लिए दर्शन व चाहत का निर्माण करना	– सारे पासबानों से जान पहचान बढ़ायें – अपनी एकता को प्रोत्साहन दें – एक दूसरे की व एक दूसरे की कलीसिया की सेवा करें
2. अराधना गीत गाना, प्रार्थना व स्तुति	परमेश्वर की अराधना करें – एक दूसरे के लिए परमेश्वर की स्तुति करें	**परमेश्वर की अराधना करें निम्न बातों के लिए प्रभु की स्तुति करें:** **– एक दूसरे के लिए** **– समूह के सदस्यों के लिए** **– सुसमाचार सभा व वृद्धि** **– अवसरों**	परमेश्वर की अराधना करें और निम्न बातों के लिए प्रभु की स्तुति करें: – नवअगुवों के लिए – समूह सदस्यों हेतु – नये समूहों के जन्म हेतु प्रार्थना करें	परमेश्वर की अराधना व निम्न बातों हेतु प्रार्थना करें: – अगुवों – उसके भविष्य को दिशा – समाज के शुद्धिकरण हेतु – कलीसिया स्थापना व उसके बढ़ने हेतू	परमेश्वर की अराधना करें व निम्न बातों के लिए स्तुति करें: – हर दूसरे सेवक हेतु – एकता के लिए (कलीसिया) – फैलना / दूसरे कलीसिया को तैयार करना – शहर / पूरे इलाके की शुद्धि हेतु प्रार्थना की योजना
3. जीतना दूसरों तक पहुँचना	– उद्धार न पाये मित्रों हेतु प्रार्थना करें – मसीह का प्रचार करना सीखें – नये लोगों तक पहुँचने के लिए प्रार्थना करें	**समूह के सदस्यों को गैर मसीही लोगों में प्रचार करन के लिए तैयार करें व प्रार्थना करें।**	समूह व कलीसियाई तौर पर प्रचार कार्यक्रमों का आयोजन	– शहरी स्तर व कलीसिया स्तर पर सुसमचार प्रचार की योजना बनायें – अन्य संस्कृतियों में सेवा – लघु समयकालीन सेवकाई की योजनाएं	– सहयोगी शहरों में प्रचार द्वारा सेवा निभाने की योजना बनायें व प्रयोग करें। – एक शहर को अपनायें/संसार में से एक देश को।
4. वचन सीखें/बाइबल अध्ययन योग्यता प्रशिक्षण	मसीही जीवन कैसे जिएं	**किस प्रकार से हम अपने समूह को बढ़ाएं और पुनः उत्पादन करें।**	अपने समूह की अगुवाई कैसे करनी है।	– दर्शन को फैलायें – महान आज्ञा को पूर्ण करने के लिए–बाइबल आधारित रणनीति बनायें	हमारे शहर, देश व संसार के लिए परमेश्वर पर विश् वास करें।
5. कार्य सेवा/अगुवों का निर्माण **● एक से एक को**	– सामर्थी आधार – सामर्थी शिष्यता	**– सामर्थी वक्तव्य में अगुवाई करना सीखें**	अपने समूह की अगुवाई करना	– एक प्रमाणित प्रशिक्षक बनें – परमेश्वर के दर्शन को पकड़ना	– एक जीवन से दूसरे जीवन को शिक्षा देना – परमेश् वर के दर्शन को पकड़ना – दूसरी कलीसियाओं को तैयार करना
● छोटा समूह एक समूह के रूप में एक साथ	छोटे समूह के समय का अनुभव	**– विस्फोटक वृद्धि शिष्य निर्माणकारी प्रक्रिया कार्यशाला** **– वार्षिक सम्मेलन**	– विस्फोटक वृद्धि–शिष्य निर्माणकारी प्रक्रिया कार्यशाला – वार्षिक सम्मेलन	– दल का निर्माण करना – सेवकाई से शोषण को दूर करना – वार्षिक सम्मेलन	– हमारे शहर, देश व संसार तक पहुँचने की योजना – सहयोगी शहरों में तैयार करने वाले कार्यक्रम

जीवन समूह की महत्वता

प्रस्तावना

हमारे चर्च में जीवन समूह की सेवकाई इफिसियों 4:12 में दी गयी आज्ञा को पूरा करने का एक वाहन है, ''जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं और सेवा का काम किया जाए।'' एक पासबान स्वयं ही देह की सारी आवश्यकताओं को कभी पूरा नहीं कर सकता। वह और अन्य वरदानपूर्ण अगुवे, जो परमेश्वर ने हमारी कलीसिया में रखें हैं, वह इस बात के ज़िम्मेदार हैं कि इस तरह से वह कलीसिया के प्रत्येक सदस्य को प्रशिक्षण दे, तैयार व उन्हें ज़िम्मेदारियाँ सौंपें कि वह अपनी निष्क्रियता को छोड़ उस सेवा को निभा पाऐं जिसके लिए वह बनाए गये हैं।

यीशु मसीह ने बारह चेलों के प्रशिक्षण केदौरान छोटे समूह की महत्वता तथा प्रत्येक चेले के साथ एक-से-एक के आधार पर समय बिताने के महत्व को प्रगट किया। इन्हीं चेलों ने उसकी सेवकाई को आगे बढ़ाया तथा इस प्रकार प्रारम्भिक कलीसिया का निर्माण हुआ। वे एक दूसरे से मिले व संगति में भागीदार बने। उस समय पर उनके पास कोई कलीसिया की इमारत नहीं थी इसलिए वह यहूदियों के अराधनालय के आँगन व छोटे-छोटे समूहों में एक दूसरे के घरों में मिले (देखें प्रेरितों के काम 5:42, प्रेरितों 2:41-47, तथा प्रेरितों के काम 20:20)। उसका परिणाम अत्यन्त सामर्थशाली था! ''और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।

आज हम एक स्थानीय कलीसिया के रूप में परमेश्वर की अराधना करने के लिए जमा होते हैं। हम उसकी अपरम्पार आशीषों का आनन्द उठाते व परमेश्वर के वचनों से मिलकर सीखते हैं, लेकिन इसके साथ लोगों को आवश्यकता है कि जैसे जैसे वह घनिष्ठता व उत्तरदायित्व से बाइबल को पढ़ते व एक साथ मिलकर प्रार्थना करते हैं, वे अपने जीवन के अनुभवों को बताने के लिए छोटे समूह में भी मिलें। एक जीवन समूह मे जब हम एक दूसरे का ख्याल करते व विचारों को बांटते हैं तो एक सच्ची संगति का निर्माण होता है।

संगति,जीवन समूह का उद्देश्य नहीं है, परन्तु फिर भी यह महत्वपूर्ण और अतिआवश्यक भाग है-जो साथ साथ स्वयं ही उत्पन्न होता है। जीवन समूह को सुसमाचार प्रचार और शिष्यता के वाहन के रूप में देखा जाना चाहिये। यह नये लोगों को कलिसिया के परिवार में जोड़कर उन्हें उनके सदृश होने में सहायता करता है।

जब मसीही जन दूसरों में अपनी सेवकाई को निभाने तथा उसका उत्पादन प्राप्त करने के लिए तैयार हो जाते हैं तो वे आत्मिक तौर पर उन्नति करेंगे। परमेश्वर के वचन को पढ़ने की तथा

एक दूसरे के लिए प्रार्थना करने की उनकी इच्छा बढ़ेगी। बहुत से लोगों का विश्वास है कि वचन की शिक्षा का परिणाम सुसमाचार प्रचार व सेवकाई होगा। अनुभव इस प्रकार से बताते हैं कि सेवकाई के दौरान परमेश्वर के वचनों को सीखने की अधिक ज़रूरत महसूस होती है। जिसका परिणाम परिवर्तित जीवन होगा। जब आप अगुवाई का प्रदर्शन करेंगे तो आपके समूह में से नये-नये अगुवे उठ खड़े होंगे। जब आपका जीवन समूह बढ़ने लगे और उससे अन्य मसीहियों का उत्पादन हो तब आप एक नया समूह तैयार करेंगे।

शिष्यता, वृद्धि की एक कुँजी है। शिष्यता का निर्माण करने का सर्वाधिक प्रभावशाली तरीका एक-से-एक को सेवकाई निभाना है। एक-से-एक को, प्रशिक्षण शायद आपके जीवन समूह का सबसे महत्वपूर्ण विस्फोटक है। आपके समूह के प्रत्येक व्यक्ति को सामर्थी आधार (4 सत्रों), सामर्थी शिष्यता (9 सत्रों) तथा सामर्थी वक्तव्य (6 सत्रों) में प्रशिक्षित होने का अवसर दिया गया है। यह एक से एक को के सत्र छोटे समूहों की सभा से बाहर संचालित किये गये हैं। जिसमें एक प्रशिक्षित व्यक्ति किसी नये व्यक्ति से उसकी सहूलियत के अनुसार मिलता है। एक पुरूष दूसरे पुरूष को, और एक स्त्री दूसरी स्त्री को प्रशिक्षण देती है। इन्हीं शिष्यों से अगुवों का निर्माण होता है। प्रशिक्षण समूह संचालन करने वाले अगुवों का उद्देश्य-ऐसे अगुवों के नेटवर्क का ख्याल रखना व उन्हें प्रेम करना है जो मसीह में बढ़ रहे हैं, और एक-दूसरे को प्रोत्साहित करने व सहायता करने के लिए समर्पित है, ताकि वे विस्फोटक शिष्य निर्माण करने वाला वह समूह बन जाए जो संसार भर में यीशु मसीह के सुसमाचार को फैलाए।

अगुवाई को सीखना

सत्र एक

स्वागत

प्रत्येक बिन्दु पर अपने अगुवे से विचार-विमर्श के उपरान्त निशान (✓) लगायें।

अपने अगुवे से मिलने से पूर्व तैयारी:

❑ 1. कलीसिया के उद्देश्य को, हमारे जीवन समूह के उद्देश्य को और हमारे जीवन समूह की मंजिल का अध्ययन करें। इसे बाँटने के लिये तैयार रहें कि आप कैसे विश्वास करते हैं कि यह सेवकाई जीवनों को बदलेगी और हमें अपनी सामुदायिकता में दूसरों तक पहुँचने में सहायता करेगी।

❑ 2. समूह रचना और कार्य वर्णन पर नज़र डालें। अपने उत्तरदायित्वों के क्षेत्रों को पहचाने और अपने अगुवे से उनका वर्णन करें।

❑ 3. हमारे समूह के कौन से पाँच प्रमुख उद्देश्य हैं? क्यों स्वागत करना (अभिवादन, बाँटना और जल-पान) हमारे समूह का अत्याधिक महत्वपूर्ण हिस्सा है?

❑ 4. पढ़ें कि कैसे अच्छे विभाजनात्मक प्रश्नों को पूछें तथा बाँटने हेतु प्रश्नों की सूची को पढ़ें। समय को बाँटने के लिये तीन विकल्पों में अपनी स्मृति में से देने के लिये तैयार रहें। इस महीने प्रत्येक सप्ताह के लिये एक प्रश्न का चयन करें।

अपने अगुवे के साथ पूरा करने के लिये:

❑ 5. एक दूसरे को जानने के लिये व्यक्तिगत विषयों को बाँटना।

❑ 6. ऊपर लिखे बिन्दू 1 से 4 को पढ़ें तथा (✓) का निशान लगायें।

इस महीने हमारे समूह के साथ बाँटने के लिये योजना निर्माण:

❑ 7. संक्षिप्त रूप से हमारे समूह के साथ हमारी कलीसिया के उद्देश्य, हमारे जीवन समूह के उद्देश्य तथा हमारे जीवन समूह के मकसद को बाँटें।
दिनाँक ______________ कौन ________________________

❑ 8. समूह संरचना की व्याख्या करें, और प्रत्येक भाग के लिये कौन उत्तरदायी होगा।
दिनाँक ______________ कौन ________________________

❑ 9. निर्धारित करें कि प्रत्येक सप्ताह में कौन प्रश्नों को बाँटने के समय की अगुवाई करेगा।
नाम ____

प्रार्थना तथा समापन:

❑ 10. एक दूसरे के लिये तथा हमारे समूह के सदस्यों के लिये प्रार्थना करें।

❑ 11. दूसरे कार्यकाल की तैयारी करें।

❑ 12. अगले अगुवाई में सीखनें के लिए दिनाँक ________________________
समय ______________________ स्थान ______________________
निर्धारित करें।

❑ 13. निर्धारित करें दिनाँक ___________________ समय __________________
स्थान __________________________________ हमारे अगले सक्रिय बाँटने के प्रशिक्षण के लिये।

हमारी कलीसिया का उद्देश्य

सबसे बड़ी आज्ञा (मत्ती 28:18-20) ही हमारी कलीसिया का अन्तिम उद्देश्य है। हम ऐसे चेले बनाने के लिए हैं जो तब तक चेले बनाते रहें जब तक सारे संसार को सुसमाचार सुनने तथा उसका प्रतिउत्तर देने का अवसर न मिल जाए। **सरल शब्दों में, चेला वह है जो यीशु के समान जीवन व्यतीत करता, और परमेश्वर के साथ चलने में इतना आनन्दित रहता है कि मसीह यीशु में अपने नये जीवन के बारे में, दूसरों को बताने से खुद को रोक नहीं सकता।**

जीवन समूह सेवकाई इस प्रकार से निर्मित की गयी है कि वह हमारी कलिसीया में प्रत्येक व्यक्ति इस प्रकार का चेला बनने में सहायता कर सके। इस प्रशिक्षण में आपको एक चेला होने और अपने समूह में दूसरों को चेला बनने के लिये अगुवाई करने का अवसर प्राप्त होता है।

हमारे जीवन समूह का उद्देश्य

एक प्रेमपूर्ण, ध्यान रखने वाला परिवार होना जो कि मसीह में बढ़ रहा है और परमेश्वर के प्रेम को दूसरों में बाँट रहा है

हमारे जीवन समूह के लक्ष्य

- कि प्रत्येक व्यक्ति प्रेम किये जाने और स्वीकारे जाने को महसूस कर सके।
- प्रत्येक व्यक्ति की शारीरिक, भावनात्मक और आत्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो।
- कि प्रत्येक व्यक्ति 6 महीने के अंदर समूह में 6-8 सार्थक संबंधों को विकसित करे।
- अन्य सेवकाईयों में भी सहभागिता को प्रोत्साहन दें उदाहरण के लिये:- सामाजिक कार्य, आराधना, सण्डे स्कूल आदि।
- प्रत्येक व्यक्ति को उसके आत्मिक वरदानों को ढूँढने में और दूसरों की सेवा में प्रयोग करने में सहायता करना।
- कि प्रत्येक व्यक्ति बपतिस्मा ले और हमारी कलीसिया का सक्रिया सदस्य बन जाये।
- प्रत्येक व्यक्ति को सामर्थी आधार, सामर्थी शिष्यता तथा सामर्थी वक्तव्य में प्रशिक्षित करना।
- प्रत्येक 6 महीने में एक नये परिवार को कलीसिया में जोड़ना।
- प्रत्येक 6 महीने में एक शिक्षक अगुवे को तथा नव जीवन समूह को स्थापित करना।
- मसीह के लिए हमारे समुदाय तक पहुँचने हेतू अनेकों जीवन समूहों को स्थापित करना।

समूह रचना

यह सप्ताह से सप्ताह में परिवर्तित हो सकता है परन्तु निम्नलिखित बिन्दुओं को इसमें सम्मिलित होना चाहिए:

स्वागत (15-20 मिनट)
- प्रारम्भिक प्रार्थना
- बाँटना, स्तुति और वर्णन करना

आराधना (15-20 मिनट)
- गाना और भजन का पढ़ा जाना

जीतना (20-30 मिनट)
- अपने प्रभावशाली मण्डल में उन्नति की सूचना दें
- बाहरी कार्यक्रम तथा सुसमाचार प्रचार के लिए रणनीति का निर्माण करना
- उन लोगों की उन्नति की जाँच करें जो एक-से-एक प्रशिक्षण में हैं।

वचन (20-30 मिनट)
- बाइबल अध्ययन
- प्रार्थना-वार्तालाप रूपी

समापन
- प्रार्थना और घोषणाऐं
- जलपान (वैकल्पिक)

कार्य
- (सप्ताह के दौरान) शिष्यता तथा अगुवाई के विकास के लिए एक-से-एक प्रशिक्षण सत्र।

निम्नलिखित निर्देशन रेखाओं का अनुसरण करें यह आपको एक प्रभावशाली जीवन समूह के योग्य बनाने के साथ ही साथ दूसरों को प्रशिक्षित करने और ऐसा ही करने में सहायता देंगी।

रचनात्मक हों, खुलें हों और आनन्द उठायें। याद रहे कि आपका लक्ष्य अपने जीवन को प्रत्येक के साथ एक प्रेमपूर्ण और स्वीकारात्मक वातावरण में बाँटना है। निश्चित करें कि आप स्थानापन्न संसाधनों को प्रयोग कर रहे हैं, क्योंकि आप अपने समूह में जो भी करते हैं वही नये समूहों में भी उत्पन्न होगा।

अपने जीवन समूहों के उत्तरदायित्वों को बाँटें ताकि अन्य लोग भी स्वामित्व को प्राप्त कर सकें। अनुभव के द्वारा ही अगुवों का निर्माण होगा।

कार्य वर्णन

अगुवा

उत्तरदायित्वः

1. रविवार की आराधना सभा में विश्वासपूर्णता के साथ उपस्थित होना
2. विश्वास के साथ परमेश्वर के कार्यों के लिये दसमाँश देना।
3. विस्फोटक वृद्धि शिष्य-निमार्णकारी प्रक्रिया कार्यशाला में उपस्थित हो।
4. जीवन समूहों को अगुवाई प्रदान करें।
5. अपने समूह के लिये भ्रमण अथवा फोन पर सम्पर्क करें (कलीसिया के आगन्तुक, कलीसिया से सम्पर्क इत्यादि)
6. प्रत्येक जीवन समूह से पूर्व निमन्त्रक/निमन्त्रिका (मेहमाननवाज़) के तथा अपने शिक्षण अगुवे के साथ मिलकर प्रार्थना करें।
7. बाइबल अध्ययन-विचारविमर्श तथा प्रार्थनाओं की अगुवाई करें (अथवा नव अगुवे को नियुक्त करें)
8. जीवन समूह समय का समापन:
   अ. कोई घोषणाऐं करें।
   ब. प्रार्थना द्वारा समापन
9. दर्शन को दें और प्रत्येक सप्ताह में सीमाओं से बाहर कार्यों को उत्साहित करें।
10. अपने शिष्य को एक-से-एक प्रशिक्षण समक्षता में सहयोग दें।
11. अपने शिष्य को सामर्थी वक्तव्य में प्रशिक्षण दें (प्रचारक भ्रमण/नियुक्ति) महीने में एक बार।
12. अपने शिष्य को महीने में एक बार अगुवाई करना सीखने में प्रशिक्षण दें।
13. महीने में एक बार अपने कोच से मिलें।
14. प्रत्येक 4-6 सप्ताह में अगुवों के समूह में अपने प्रशिक्षक के साथ तथा अन्य समूह के अगुवों के साथ शामिल हों।
15. अगुवों के वार्षिक अपसरण में उपस्थित हों।

नव-अगुवा (प्रशिक्षण में अगुवा)

उत्तरदायित्वः

1. रविवार की आराधना सभा में विश्वासपूर्णता के साथ उपस्थित होना।
2. विश्वास के साथ परमेश्वर के कार्यों के लिये दसमाँश देना।
3. विस्फोटक वृद्धि शिष्य-निर्माणकारी प्रक्रिया कार्यशाला में उपस्थिति दें।
4. जीवन समूह की अगुवाई में सहायता दें।
5. अपने अगुवे के साथ भ्रमण तथा फोन पर अन्वेषण करें (कलीसिया के आगन्तुक, कलीसिया से सम्पर्क इत्यादि)।

6. प्रत्येक सभा से पूर्व प्रार्थना के लिये अपने अगुवे तथा मेज़बान के साथ मिलें।
7. जीवन समूह समय को आरम्भ करना।
   - अतिथियों का परिचय दें और सभी का अभिनन्दन करें।
8. वक्तव्य के समय की अगुवाई करें (वक्तव्य प्रश्नों के उदाहरण को देखें) या किसी और को नियुक्त करें।
9. अगुवे के निवेदन पर समय-समय पर बाइबल अध्ययन और वार्तालाप की अगुवाई करें।
10. प्रार्थना-विनतियों पर वार्ता तथा विचार-विमर्श करें, कलीसिया सम्बन्धी घटनाओं तथा अन्य सूचनाओं को बताएं। बातचीत के दौरान प्रार्थना समय में अगुवाई करें (अथवा अवसर के अनुरूप अन्य व्यक्ति भी अगुवाई कर सकता है)
11. समूह सदस्यों की एक-से-एक शिष्यता प्रशिक्षण में समन्वयता करना।
12. सत्रों की अगुवाई को सीखने के लिये महीने में एक बार अपने अगुवे को मिलें।
13. सामर्थी वक्तव्य प्रशिक्षण के लिये महीने में एक बार अपने अगुवे को मिलें।
14. अगुवों के वार्षिक अपसरण में उपस्थित होना।

मेज़बान

उत्तरदायित्वः

1. रविवार की आराधना सभा में विश्वासपूर्णता के साथ उपस्थित हों।
2. विश्वास के साथ परमेश्वर के कार्यों के लिये दसमाँश देना।
3. प्रत्येक जीवन समूह सभा से पहले अपने अगुवे तथा शिक्षक अगुवे से प्रार्थना के लिये मिलें।
4. एक आरामदायक सभा-स्थल को उपलब्ध करायें और अगुवों के साथ सहयोग हेतु कुर्सियों को व्यवस्थित करें।
5. बच्चों की देखरेख को आवश्यकतानुरूप उपलब्ध करायें। सामान्य परिस्थितियों में यह उत्तम होगा कि प्रत्येक अपनी व्यवस्था की ज़िम्मेदारी ले।
6. अतिथियों के अभिनन्दन की तैयारी हेतु सभा से पूर्व ही चाय-पानी की व्यवस्था कर लें।
7. जो अपनी इन वस्तुओं को लाना भूल गये, उनके लिये अतिरिक्त बाइबल तथा पेन्सिल उपलब्ध करायें।
8. प्रत्येक अतिथि में सार्थक रूचि को दर्शायें, सभी का अभिनन्दन मुस्कुराते हुऐ करें।
9. उपस्थिति सूचनाओं को रखें (साप्ताहिक उपस्थिति रजिस्टर के नमूने से देखें)।
10. एक-से-एक को प्रशिक्षण में प्रत्येक की उन्नति पर ध्यान दें तथा छोटे समूह के दौरान उन्हें बधाई द्वारा प्रत्येक स्तर के पूर्ण होने पर प्रमाणित करें।

जीवन समूहों के पाँच प्रमुख उद्देश्य

स्वागत, आराधना, जीतना, वचन और सेवा, जीवन समूहों के पाँच प्रमुख उद्देश्य हैं। इनमें से प्रत्येक सत्र में हम इन उद्देश्यों में से एक-एक पर प्रकाशन डालेंगे।

स्वागत

एक प्रेमपूर्ण, आपस में बाँटने वाली तथा ध्यान रखने वाली संगति का निर्माण करना

एक जीवन समूह में प्रत्येक व्यक्ति को वास्तव में सुना जाता, ध्यान रखा जाता तथा प्रार्थना में लगातार यात रखा जाता है। यह हमें ऐसा प्रसंग प्रदान करता है जिससे हमें संबन्धों का बोध होता है। एक खुले हुए आत्मिक पारिवारिक वातावरण को सृजा जा सकता है जो मसीह यीशु में सच्चा शिष्य होने की भूख और प्यास को ला सकता है।

''यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो।''
(यूहन्ना 13:35)

''अर्थात सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो। और मेल के बन्ध में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो।'' (इफिसियों 4:2,3)

''और वैसे ही हम तुम्हारी लालसा करते हुए, न केवल परमेश्वर का सुसमाचार, पर अपना अपना प्राण भी तुम्हें देने को तैयार थे, इसलिए कि तुम हमारे प्यारे हो गये थे।''
(1 थिस्सलुनीकियों 2:8)

स्वागत

अभिनन्दन (मेज़बान)

- प्रत्येक व्यक्ति का अभिनन्दन मित्रवत तरीके से करें
- समस्त नये सदस्यों की सूचना रखें तथा नियमित उपस्थित होने वालों को भी नोट करें।
- प्रार्थना से प्रारम्भ करें

बाँटना: (शिक्षक अथवा अगुवे)

- अगुवे नये लोगों की सहायता के लिये सुनिश्चित रहें और समूह में प्रत्येक को परिचित करें।

- अपने विधिपूर्वक वक्तव्य को समय पर प्रारम्भ करने के लिये सुनिश्चित रहें।
- समूह को एक साथ बुलाऐं तथा मात्र एक अतिरिक्त कुर्सी के साथ उन्हें एक छोटे घेरे में बैठाऐं।
- अगुवे खुले हुऐ तथा ईमानदार रहकर स्वर को स्थिर करें।
- एक वक्तव्य प्रश्न को पूछें।
- अवसर के अनुरूप गवाही देने का अवसर प्रदान करें।

नोट: *शर्मीले और नये लोगों के लिये सजग रहें। अगुवे हिस्सा ले किन्तु प्रभुता न करें।*

जलपान (वैकल्पिक): मेज़बान

- अपने समूह समय के उपरान्त, आप जलपान परोस सकते हैं। प्रतिस्पर्धी न हो, मुस्कुरायें।

अच्छे वक्तव्य प्रश्नों को किस प्रकार पूछें ?

एक आनन्दमय वक्तव्य का समय आपके समूह के लिये बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह लोगों को आपस में विश्राम और आराम से रहने में सहायता करेगा। यदि लोग वक्तव्य समय में हिस्सा लेते हैं तब वह और आसानी से बाइबल अध्ययन तथा प्रार्थना समय को अनुसरण कर पायेंगे।

किसी को समय से पहले वक्तव्य प्रश्नों को तैयार करने के नियुक्त करें। एक निर्धारित सूची उन्हें सही प्रश्नों के चयन में सहायता करेगी। वक्तव्य के समय में अत्यधिक गम्भीर न हो। इसे एक खुशनुमा तथा आनन्दमय समय बनाये क्योंकि यह आपके समूह को सही आत्मा प्रदान करेगा।

अच्छा है कि तीन विकल्पों को रखा जाये:-
1. एक विचारणीय प्रश्न को वक्तव्य समय के लिये चुना जाये।
2. जो कुछ भी उनके साथ सप्ताह में घटा उसमें से वह कुछ भी बाँट सकते हैं।
3. आगे बढ़ाना, इसका अर्थ है कि उनके पास बाँटने के लिये कुछ नहीं है।

किसी एक व्यक्ति से प्रारम्भ न करें तथा घेरे में न जायें क्योंकि इससे शर्मीले लोग भयभीत हो जाएंगे और वे यह दबाव महसूस करेंगे कि उन्हें बाँटना ही है। बस लागों को उनकी इच्छानुसार बाँटनें के लिये छोड़ दें। वह व्यक्ति जो प्रश्न का चयन करता है साधारणतया वही आरम्भ करना चाहता है क्योंकि

उसके (स्त्री/पुरूष) पास उस प्रश्न के बारे में सोचने का समय रहता है, और वह जानता है कि आगे के समय में किस प्रकार उत्तर देना है।

यह आपके समूह का एक बहुमूल्य समय है किन्तु प्रयास करें कि यह समय 15-20 मिनट तक ही सीमित हो।

आप चाहेंगे कि कभी-कभी किसी को अपने समूह में गवाही बाँटने के लिये तैयारी का अवसर प्रदान किया जाये। यदि कोई अपने विश्वास को बाँटने के लिये योग्य हुआ अथवा किसी के पास प्रार्थनाओं का असाधारण प्रत्युत्तर होगा, तब वह इन उत्तेजनामय समाचारों को समूह के साथ बाँटना चाहेंगे।

उन आवश्यकताओं और आशीषों को सुने, जो स्तुति और प्रार्थना के कारण हो सकते हैं। या आप रुककर ज़रूरतों के लिए प्रार्थना कर सकते हैं या फिर वक्तव्य के दौरान परमेश्वर की आशीष के लिए उसकी प्रशंसा कर सकते हैं। जीवन के यह अनुभव वास्तविक हैं। आप उन्हें प्रतिबिम्बित करने का अवसर भी प्राप्त कर सकते हैं तथा बाइबल अध्ययन के समय में उनके जीवन में इन बातों का इस्तेमाल किया जा सकता है।

अगुवे भाग लें किन्तु वक्तव्य समय में प्रभुता न करें। एक दूसरे के बारे में जानने में मज़े और आनन्द लें।

प्रश्नों को बाँटना

- अपने जीवन के सबसे खुशी के दिन को बाँटें।
- आप किसी ऐसे व्यक्ति के समक्ष स्वयं को कैसे वर्णित करेंगे जो आपको जानता नहीं ?
- कौन सा रंग आज आपकी भावनाओं को सबसे अच्छी तरह से वर्णित करता है ?
- आप अपने सबसे अच्छे मित्र में किस बात की प्रशंसा करते हैं ?
- वह कौन सा सबसे असाधारण तरीका है, जिससे परमेश्वर ने आपसे कभी बात की है ?
- जो भी पुस्तकें आपने पढ़ीं उनमें से सबसे अच्छी पुस्तक कौन सी है ? और क्यों ?
- जब आपका देहान्त हो जाए और आपकी कब्र के पत्थर पर कुछ नक्काशी करके लिखा जाये, तो वह क्या होगा ?
- वह कौन सा ऐसा कार्य है जो आप घर में करना पसन्द करेंगे ?
- आपको जितने भी उपहार मिले उनमें से सबसे अच्छा उपहार कौन सा है और क्यों ?
- यदि आप अपने भीतर किसी एक चीज़ को बदल सकते तब वह क्या चीज़ होती ?
- क्या कभी परमेश्वर आपके लिये एक शब्द से बढ़कर हुआ ? कब ?
- बताएं, जब आप बारह वर्ष के थे, तब कहाँ रहते थे और कोई घटना जो आपको याद हो ?
- जब आप बड़े हो रहे थे, तब वह कौन सा आपका मनपसन्द खेल था जो आप खेलते थे ?
- आपके पास कौन से दो या तीन मूल्यवान अधिकार हैं ? और वह मूल्यवान क्यों हैं ?
- वह कौन सी ऐसी चीज़ है जो आप भविष्य में देखने के लिये इच्छुक हैं ?
- वह कौन सा ऐसा व्यक्तिगत सम्बन्ध है जिस पर आप कार्य करना चाहेंगे ?
- आपने पहली बार यीशु के बारे में कब सुना और आपने उसके बारे में क्या सोचा ?
- मौसम सूचना के प्रस्तुत करने की शैली में आज अपने जीवन का वर्णन करें।
- वह ऐसी कौन सी चीज़ है जो आपको सर्वाधिक सन्तुष्टि प्रदान करती है ?
- मेरा आज तक का सबसे भयावह अनुभव था ....
- मैं यात्रा करना पसन्द करूँगा ....
- जब आपके पास अपने लिये खाली समय है, तब आप क्या करना पसन्द करेंगे ?
- घर में आपका पसन्दीदा स्थान कौन सा है, और क्यों ?
- क्या आपके पास बच्चे के समान एक मनपसन्द पालतू जानवर था ? वह इतना खास क्यों था ?
- अगले साल में इस समय तब आप अपने व्यवसाय में क्या सुधार देखना चाहेंगे ?
- (प्रभु यीशु के अतिरिक्त) आपके जीवन में सबसे प्रभावशाली व्यक्ति कौन है ?
- जब आप बड़े हो रहे थे तब आपका धनिष्ठ मित्र कौन था और क्यों ?
- अगला साल मेरे लिये अच्छा दिखता है क्योंकि ....
- लोगों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि मैं ....
- दिन अथवा सप्ताह के अन्त में तनाव को दूर करने के लिये आप क्या करते हैं ?
- आपको क्या परेशान करता है, और क्यों ?
- आपका मनपसन्द इत्र कौन सा है इससे आपकी कौन सी यादें जुड़ी हैं ?

अगुवा

जीवन समूह
साप्ताहिक
उपस्थिती
रजिस्टर

नाम	दिनाँक												

ज़्यादा प्रार्थना –
ज़्यादा सामर्थ्य –
ज़्यादा स्तुति !

निवेदन	दिनाँक	उत्तर	दिनाँक

अगुवाई को सीखना

सत्र दो

वचन

प्रत्येक बिन्दु पर अपने अगुवे से विचार-विमर्श के उपरान्त निशान (✓) लगायें।

अपने अगुवे के साथ मिलने से पूर्व तैयारी:

❑ 1. पढ़ें, क्यों छोटे समूह? हमारी कलीसिया में विभिन्न छोटे समूहों के बारे में विचार-विमर्श करने के लिये तैयार रहें।

❑ 2. पढ़ें, क्यों जीवन समूह? छोटे समूहों तथा जीवन समूहों के बीच भिन्नता का वर्णन करने के लिये तैयार रहें।

❑ 3. पढ़ें, विशाल की तुलना में छोटे अधिक बड़े क्यों हैं? नये समूह को जन्म देने के द्वारा, हमारे समूह को उत्पन्न करने में अपने समर्पण को बाँटने के लिये तैयार रहें, ताकि हम समूहों को छोटा रख सकें।

❑ 4. पढ़ें, वचन-सीखें / बाइबल अध्ययन। परमेश्वर के साथ मेरा दैनिक समय तथा परमेश्वर के साथ सम्पर्क पर विचार-विमर्श के लिये तैयार रहें।

अपने अगुवे के साथ पूरा करने के लिये:

❑ 5. प्रत्येक अपने व्यक्तिगत आनन्द और चिन्ताओं को बाँटें। समूह की आवश्यकताओं पर विचार करें।

❑ 6. चर्चा करें तथा ऊपर 1 से 4 तक टिक (✓) करें।

इस महीने हमारे समूह के साथ बाँटने के लिये योजना:

❑ 7. परमेश्वर के साथ मेरा दैनिक समय-अभ्यास पुस्तिका की व्याख्या करें।
दिनाँक ____________ नाम ____________________

❑ 8. सामर्थी जीवन प्रक्रिया की व्याख्या करें।
दिनाँक ____________ नाम ____________________

❑ 9. अपनी व्यक्तिगत उन्नति को मार्ग दें। यह जानने के द्वारा कि उसने क्या पूर्ण कर लिया है, प्रत्येक व्यक्ति की उन्नति को दर्ज करें।
दिनाँक ____________ नाम ____________________

प्रार्थना और समापन:

❑ 10. आपस में एक दूसरे कि लिये तथा हमारे समूह के सदस्यों के लिये प्रार्थना करें।

❑ 11. तीसरे सत्र की तैयारी करें।

❑ 12. अगुवाई को सीखने के अगले सत्र हेतु दिनाँक ____________
समय ____________ स्थान ____________
निर्धारित करें।

❑ 13. हमारे अगले सक्रिय वक्तव्य प्रशिक्षण के लिये दिनाँक ____________
समय ____________ स्थान ____________
निर्धारित करें।

छोटे समूह क्यों ?

छोटा समूह आधुनिक काल में प्रारम्भिक घरेलू कलीसिया की परछाई है। इसमें लगभग 6-10 लोगों की अपेक्षा की जाती है परन्तु 4-12 लागों के द्वारा यह कहीं भी दूसरा समूह बन सकता है। हम यह महसूस करते हैं कि इस समय में आधुनिक संसार की यह जबरदस्त माँग है तथा इसके साथ-साथ यह बाइबल कि आज्ञा स्वरूप भी है कि हमें प्रेम, सेवा तथा एक दूसरे की बढ़ौतरी के प्रति उसकाने के लिए, पुनः छोटे-छोटे व घरेलू समूह के विचार में वापस जाना होगा, जिसमें लोगों को ऐसा अर्थपूर्ण स्थान उपलब्द होता है जहाँ वह आपसी सम्बन्ध, व्यक्तिगत परिपक्वता तथा सेवकाई में मज़बूत बन सकते हैं।

छोटे समूह एक बाइबल स्वरूप समाज का निर्माण करते हैं जहाँ मसीही लोग जब इस संसार में मसीह के प्रेमपूर्ण चरित्र को प्रगट करते हैं, तो वह आपस में पारस्परिक उत्तरदायित्व रखने वाले सम्बन्ध को बना सकते हैं।

विभिन्न प्रकार के छोटे समूह

	पोषण/देखरेख	बाइबल अध्ययन	सहायता	सेवा / सेवकाई का दल
जोर देना	जोड़े से जोड़े में पासबानी, मसीह के समान बन जाती है, एक दूसरे से प्रेम करो दूसरों को चेला बनाओ।	मसीही जीवन के लिए बाइबल की सूचनाओं को एक आधार के रूप में प्रदान करती है; प्रार्थना में सहमत हों।	ज़िम्मेदार सदस्य जब व्यक्तिगत कठिनाईयों से होकर गुज़रते हैं तो यह उनकी सहायता करती तथा उन्हें एकजुट करके रखती है।	विशेष योजनाओं और लक्ष्यों को पूर्ण करता है, मसीह के समान बनता है।
चरित्र	आत्मिक वरदानों का इस्तेमाल समूह के भीतर करना, प्रचार कार्य को बढ़ावा देना, समीकरण और शिष्यता; गहन सच्चाई की नींव तथा खुलापन हो	बाइबल की पुस्तकों पर अध्ययन को केन्द्रित किया जा सकता है; विषय रूपी अनुच्छेद या पुस्तक; कुछ समूह प्रार्थना या संगति पर जोर दे सकते हैं; ज्यादातर इनकी अगुवाई किसी एक शिक्षक के द्वारा होती है।	लक्ष्य तथा कार्य सेवकाई के निर्देशक के द्वारा निर्धारित होते हैं; वाद-विवाद, प्रार्थना, तथा किसी विषय पर बहस हो सकती है।	लोगों को एक खास मकसद के लिए एकत्र करते है; एकता की मज़बूत भावना को उत्पन्न करते हैं, ऐसे माहौल का निर्माण करते हैं जहाँ कार्य पूरा हो जाए।

समय अन्तराल	नियमित रूप में बढ़ते तथा नये समूहों को जन्म देते रहे।	जीवन काल इस बात पर निर्भर करता है कि नये लोग निरन्तर आ रहे है या नहीं।	समूह की व्यक्तिगत जरूरतों तथा उद्देश्य पर निर्भर करता है	चर्च सेवकाई के ढाँचे पर अनेकों निर्भर हैं।
पुनः उत्पादन	समूह बढ़कर नये अगुवों का उत्पादन करता व उन्हें प्रशिक्षित करता है	एक समय के बाद समूह में एक सह अगुवा खड़ा हो	नव-अगुवे प्रशिक्षित होते हैं ताकि वह नये समूह का निर्माण कर सकें	चुना हुआ समूह सेवकाई चला सकता है; नियुक्त या स्वेच्छा से कार्य करने वाला समूह पुनः उत्पादन का कार्य कर सकता है।

अलग अलग स्तर की परिपक्वता वाले लोगों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए, अलग अलग प्रकार के समूहों की ज़रूरत पड़ सकती है। यह समूह अधिकतर आकर्षण के क्षेत्र से ही बनते हैं जैसे वैवाहिक स्तर, आयु, व्यक्तिगत ज़रूरतें जीवन के विभिन्न पढ़ाव, लक्ष्य या सेवकाई।

यह सारे समूह नये लागों को अपने प्रभावशाली क्षेत्रों द्वारा आकर्षित करने से ही बढ़ते हैं जैसे :

- लक्ष्य या सेवा
- वरिष्ठ (केवल वरिष्ठ)
- मिश्रित (सब आयु और स्तर के लोग)
- मिश्रित- केवल व्यस्क जो कॉलेज की आयु से ऊपर हो (किसी भी स्तर के)
- स्त्रियाँ
- पुरूष
- अविवाहित (केवल अविवाहित)
- युवक
- हाई स्कूल के उम्र वाले
- कनिष्क हाई स्कूल वाले - इस समूह के लिए विशेष शिक्षा सामाग्री तैयार करनी चाहिए
- बच्चे (केवल) - इस समूह के लिए खास शिक्षा का निर्माण करना चाहिये
- परिवार (अभिभावक व जवान बच्चे साथ साथ)

जीवन समूह क्यों ?

उपरोक्त लिखित किसी भी प्रकार का समूह मूल्यवान है। ज़्यादातर छोटे समूहों में निम्न बाते होती हैं :-

1. **स्वागत - प्रेम / वक्तव्य**
2. **वचन - सीखना / बाइबल अध्ययन**
3. **अराधना - स्तुति व अराधना**

एक जीवन समूह बिल्कुल भिन्न होता है। जीवन समूह के अन्दर एक अगुवा समूह के सदस्यों को दूसरों पर सेवा निभाने के लिये तैयार करता है और उसे पासबानी के गुण सिखाता है ताकि सबकी ज़रूरतें पूरी हो सकें।

छोटे समूह का समय

जबकि समूह का समय काल दूसरे समूहों के समान ही होगा, जीवन समूह में दो मुख्य और महत्वपूर्ण अंश हैं जो वास्तव में समूह के जीवन की तथा कलीसिया के जीवन की विवेचना करते हैं जिसमे कलीसियों के उद्देश्य शामिल हैं।

एक से एक का समय

एक से एक की शिष्यता, सामर्थी आधार, सामर्थी शिष्यता तथा सामर्थी वक्तव्य तथा नव अगुवों के लिए अगुवाई का प्रशिक्षण जिसका नाम अगुवाई करना सीख रहे हैं तथा उसके साथ में कार्य का अनुभव, तथा अन्य मुख्य व महत्वपूर्ण बातों को जोड़ती है :

4. **कार्य - सेवा / अगुवों का विकास तथा शिष्यों का प्रशिक्षण**
5. **जीतना - दूसरों तक सुसमाचार पहुँचाना**

जब लोगों को शिक्षा दी जाएगी; तो अगुवे मज़बूत होंगे। ज़्यादा अगुवों का अर्थ है ज़्यादा सेवकाई। वर्तमान जीवन समूह अनेकों जीवन समूहों का उत्पादन कर सकता है।

याद रखें : एक से एक को शिष्यता + छोटा समूह = जीवन समूह

छोटा आखिर विशाल से बड़ा क्यों है ?

अधिकतर लोग सोचते हैं कि कोई समूह जितना बड़ा है- उतना ही सफल है। परन्तु वास्तविक्ता में, छोटे समूह ज़्यादा तेज गति से बढ़ते हैं, क्योंकि वह अगुवों के विकास हेतू अधिक क्षमता प्रदान करते हैं। जिसका परिणाम सेवकाई में अधिक लोग होंगे।

उदाहरण :

- एक समूह 12 लोगों द्वारा प्रारम्भ होकर 18 लोगों तक बढ़ता है तथा कुछ वर्षों तक उसमें 16-20 लोग आते हैं- सारे लोगों की संख्या 20 है।
- दूसरा समूह केवल पाँच लागों से शुरू होता है और 10 लोगों तक बढ़ता है और छः महीने के बीच में ही वह एक नये समूह को जन्म देते हैं। और जल्द ही पाँच लोगों वाले 2 समूह, 10 लोगों वाले 2 समूह बन जाते हैं जिनमे से प्रत्येक फिर नये समूह को जन्म देता है। 5 लोगों के 4 समूह (20 लोग) जल्द ही 5 लोगों वाले 8 समूह बन जाते हैं (40 लोग) जो जल्द ही 10 लोगों वाले 8 समूह बन जाते हैं (80 लोग) और जो शीघ्र ही बढ़कर 10 लोगों वाले 16 समूह बन जाते हैं (160 लोग)

समूह	प्रारम्भिक संख्या		बढ़े	बन गये	योग
1	5 लोगों से	➔	10	5 लोगों वाले 2 समूह	= 10
2	5 लोगों से	➔	10 (20)	5 लोगों वाले 4 समूह	= 20
4	5 लोगों से	➔	10 (40)	5 लोगों वाले 8 समूह	= 40
8	5 लोगों से	➔	10 (80)	5 लोगों वाले 16 समूह	= 80
16	5 लोगों से	➔	10 (160)	5 लोगों वाले 32 समूह	= 180

पहले प्रकार का समूह जोड़ में बड़ता है। दूसरा समूह गुणन में बढ़ता है

जब कोई समूह 10 की संख्या तक पहुँचता है तो उसके द्वारा नया समूह क्यों शुरू करें ? एक बड़ा समूह क्यों न बन जाएं ?

अनुभव इस प्रकार से बताते हैं कि समूह 10 की संख्या तक जल्द ही बढ़ जाते हैं परन्तु 10 के बाद उनकी बढ़ौतरी बहुत धीमी होती है। **क्यों ?**

4 से 10 लोगों के छोटे समूह में :

- लोगों में सेवकाई अदभुत व व्यक्तिगत रूप से निभाई जाती है क्योंकि अगुवे के पास देखभाल करने के लिए केवल कुछ ही लोग होते हैं।
- ज़्यादा खुले और ईमानदार रहते हैं।
- लोगों को आकर्षित करने के द्वारा बढ़ने की ज़्यादा इच्छा रहती है
- नये लोगों को बुलाने और उनके आने में कम खौफनाक साबित होते हैं।
- इसमें ज़रूरत पड़ती है कि प्रत्येक जन भाग ले इसलिए प्रत्येक के पास यह अवसर होता है कि वह अपने वरदानों का इस्तेमाल करे तथा दूसरों की अगुवाई करना सीखें।
- नये अगुवों को ज़िम्मेदारी सौपना आसान होता है (बहुत से लोग केवल 5 लोगों के दल की अगुवाई कर सकते हैं, परन्तु कुछ ही लोग 20 लोगों के समूह की अगुवाई कर पाएंगे)।

वचन-सीखें / बाइबल अध्ययन

परमेश्वर के वचनों को अध्ययन व लागू करना

क्योंकि बाइबल में हमारे जीवन जीने के लिए महत्वपूर्ण व विशेष निर्देश दिए हुऐ हैं इसलिए यह ज़रूरी है कि हम उसका अध्ययन करें व उसे समझें। फिर भी समझना ही सब बातों का अन्त न हो जाए। परन्तु हमें समझकर परमेश्वर के वचनों को लागू करना तथा उसके द्वारा वह फल लाना है जिसके लिए परमेश्वर ने हमें चुना है।

''तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्होंने उनकी प्रतीति की थी कहा यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे।'' –यूहन्ना 8:31

''क्या ही धन्य है वह पुरुष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता, और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता है, और न ठट्टा करने वालों की मण्डली में बैठता है, परन्तु वह जो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता, और उसकी व्यवस्था पर रात-दिन ध्यान करता रहता है।'' –भजन संहिता 1:1,2

''जिस का प्रचार हम करके हर एक मनुष्य को जता देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं कि हम हर एक मनुष्य को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें।'' –कुलुस्सियों 1:28

''अपने आपको परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाये और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।'' – 2 तीमुथियुस 2:15

वचन - सीखना/बाइबल अध्ययनः (नवअगुवा या अगुवों की अगुवाई)

- सामर्थी शिष्यता के अध्याय तीन को परमेश्वर से बातचीत करते-करते अध्ययन करें या दोहराएं। समूह के साथ में मूल सन्दर्भ (अर्थ) का वर्णन करें तथा उन्हें परमेश्वर के साथ मेरा प्रतिदिन का समय नमूने का अभ्यास पृष्ठ दिखा दें। उनके साथ किसी आशीष को बाँटे या किसी अन्य व्यक्ति को अवसर दें जो बता सकें कि इन चीज़ों को इस्तेमाल करने के द्वारा उन्हें परमेश्वर के साथ उनके चलने से आशीष मिली है।

- तैयार सामग्री का अध्ययन करें। उदाहरण: अर्न्तराष्ट्रीय डायनामिक चर्च की जीवन गाथा या पासबान के रविवार के संदेशों पर आधारित प्रश्नोत्तर पर वार्तालाप।

- ध्यान दें कि किस प्रकार जीवन अध्ययनों का प्रयोग करना है। सर्वप्रथम चेलों का बुलाना, नमूने को देखें। यह 24 अध्यायों की एक शृंखला है। (इस पुस्तक के अन्त में दिये मांग-पत्र प्राप्त करें)

- इसके अलावा और भी सटीक शिक्षाओं के कोर्स उपलब्ध हैं। विस्फोटक-वृद्धि शिष्यनिर्माणकारी प्रक्रिया कार्यशाला में से ''अपने समूह हेतु पाठ्यक्रम चुनना'' को पढ़ें। इससे आपकी अपने समूह का मूल्यांकन करने तथा अपने समूह के लिए सर्वाधिक उत्तम शिक्षा सामग्री पढ़ने में सहायता होगी।

ध्यान दें: *यह शिक्षा सामग्री कोई गहन अध्ययन के मकसद से नहीं परन्तु संक्षेप में भक्ति के लिए तैयार की गयी है। चाहे एक से एक को अध्ययन में कितने भी लोग शामिल हों परन्तु कोई गृहकार्य उन्हें नहीं दिया जायेगा। संवेदनशील बने।*

यदि हर एक जन भाग लेता है तो आपका बाइबल अध्ययन समय सर्वाधिक लाभदायक व आनन्दमय समय होगा। इस अध्ययन के अगुवे होने के नाते यह आपका कर्तव्य है कि आप सदस्यों को इसमें शामिल होने के लिए उत्साहित करें। ऐसा महसूस न करें कि आपको सिखाना है या प्रचार करना है परन्तु आप सदस्यों को ऐसा माहौल उपलब्ध करायें कि वह आपस में चर्चा कर सकें। आप अपने कोर्स के मूल विषय को बाँट सकते हैं परन्तु किसी पर अधिकार न चलाएं। चर्चा चलने का ढंग:

इस तरह

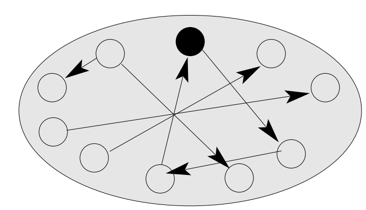

इस तरह नहीं

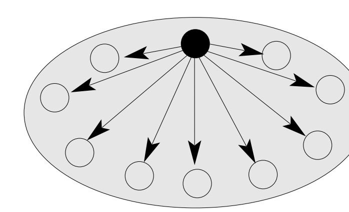

निम्नलिखित चित्र के समझाइए तथा जैसे सामर्थी प्रक्रिया में दर्शाया गया है एक से एक की सामग्री को दिखाएं।

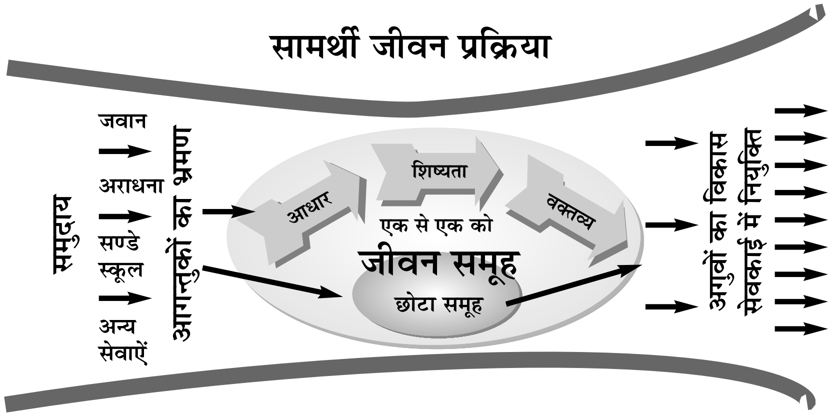

अपनी व्यक्तिगत बढ़ौत्तरी पर नज़र रखना

प्रत्येक जन नक्शे से बताये कि उसने क्या समाप्त किया है

नाम	सामर्थी आधार	सामर्थी शिष्यता	सामर्थी वक्तव्य	**इनमें दूसरों को शिक्षा दीः**	सामर्थी आधार	सामर्थी शिष्यता	सामर्थी वक्तव्य	**इस रूप में सेवा कीः**	मेज़बान	नव अगुवा	अगुवा

हमारा लक्ष्य प्रत्येक जन के लिए शिष्यता का प्रशिक्षण तथा अगुवों को विकास प्रदान करना होगा।

जीवन अध्ययन

प्रथम शिष्यों का बुलाया जाना
लुका 5:1–11

प्रश्नों का उत्तर दें, आपको कैसा लगा जब पहली बार आपने

1. तैरने की कोशिश की
2. नया खेल खेलने की कोशिश की
3. स्कूल से भागे
4. घर छोड़ा
5. आपको नौकरी मिली

वचन पठन

लूका 5:1–11 को पढ़ें और निम्नलिखित बातों पर चर्चा करें।

1. क्या आप सोचते हैं, कि यह एक संयोग था, जब यीशु को उसकी नाव की आवश्यकता पड़ी, तब शमौन पतरस अपने जाल को धो रहा था, या यह परमेश्वर की एक योजना थी?
   क. यह संयोग था
   ख. परमेश्वर की योजना थी
   ग. पता नहीं

2. यदि आप शमोन पतरस होते जब यीशु ने उनसे कहा कि, ''गहराई में ले चल और मछली पकड़ने को अपने जाल डाल'' तो आपका प्रतिउत्तर क्या होता?
   क. जैसा पतरस ने किया
   ख. मैंने ऐसा न करने के लिए कोई बहाना बना दिया होता।
   ग. यीशु से कहता आप प्रचार करो, और मुझे मछली पकड़ने दो।
   घ. किसी और समय जाने के लिए कहते।
   ङ चुपचाप आगे बढ़ जाते।

3. जब उन्होंने ''इतनी मछलियाँ पकड़ लीं कि उनके जाल फटने लगे तो'' आपके विचार से शमौन पतरस क्या सोच रहा था?
   क. इतनी ढेर मछलियों से कितने पैसे मिलेंगे?
   ख. यीशु पर शक करके वह कितनी गलती कर रहा था?
   ग. उसे पता नहीं था कि क्या सोचे?
   घ. वह पहचान गया कि यीशु कौन था?

4. जब शमौन पतरस ने कहा "हे प्रभु मेरे पास से दूर चला जा; मैं एक पापी मनुष्य हूँ!" तो इसका क्या अर्थ था?
    क. मैं झुकता हूँ क्योंकि तू मछली पकड़ने के बारे में मुझसे अधिक जानता है।
    ख. मेरे पापमय जीवन की वजह से मुझे तेरे साथ असहज महसूस हो रहा है।
    ग. मैं जानता हूँ कि तू जो कहता है तू वही है परन्तु मैं तेरा अनुसरण नहीं कर सकता।
    घ. मुझे दोषी न ठहरा, मुझे अकेला छोड़ दे।
    ङ मैं उलझन में हूँ, मैं तेरा अनुसरण करना चाहता हूँ परन्तु यदि मैं हाँ कहता हूँ तो इसका अर्थ–मुझे अपने जीवन को बदलना होगा, जिसस मैं भयभीत हूँ।

इस्तेमाल

अपनी आत्मिक जीवन यात्रा पर ध्यान दें।

1. आपके आत्मिक जीवन की शुरुआत पतरस की तुलना में कैसी थी।
    क. इतनी नाटकीय नहीं थी
    ख. बहुत दिमागी थी
    ग. उलझी थी
    घ. ज्यादा नाटकीय थी
    ङ भिन्न, परन्तु सच थी
    च. पता नहीं

2. आप अपनी आत्मिक नाव का किस तरह वर्णन करेंगे?
    क. डूब रही है
    ख. एक स्थान पर खड़ी है
    ग. गलत दिशा में जा रही है
    घ. मरम्मत की आवश्यकता है
    ङ साथ साथ चल रही है
    च. तूफान से ठीक हो गयी

3. यदि यीशु आपसे 'गहरे में जाकर, अपने जाल को डालने के लिए कहे' तो आपका प्रतिउत्तर क्या होगा?
    क. मैं डर जाऊँगा
    ख. सोचूँगा कि यह तो बेकार विचार है
    ग. ठीक है लेकिन
    घ. यदि कोई मेरे साथ चले तो मैं करूँगा
    ङ बढ़िया! कब हम शुरू कर सकते हैं?
    च. मुझे नहीं पता तुम क्या कह रहे हो

4. जाने के लिए आपका क्या जायेगा?
    क. उसका मूल्य जोड़ने में समय लगेगा
    ख. व्यवस्थित होने में समय लगेगा
    ग. पता नहीं
    घ. मेरे दोस्तों का साथ
    ङ मेरे जीवन को साफ करने में सहायता
    च. आज्ञाकारिता

सन्देश का शीर्षक

विषय ______________________

दिनाँक ____________ वक्ता ____________

बाइबल का पद ______________________

मुख्य बिन्दुओं और प्रत्येक के लिए विचार को लिखें

____
____
____
____
____

मुझे जिसने सर्वाधिक प्रभावित किया ____________
____
____
____

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहे हैं ____________
____
____
____

मेरा प्रतिउत्तर है कि ____________
____
____
____

परमेश्वर के साथ मेरा प्रतिदिन समय

20 ______ के ________ हफ्ते से ______ तक

इस सप्ताह का स्मरण वचन: (प्रत्येक दिन दोहरायें)

पद ________________

दिन 1 बाइबल अध्ययन वचन

सर्वाधिक अर्थपूर्ण पद

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है

मेरा प्रतिउत्तर

दिन 2 बाइबल अध्ययन वचन

सर्वाधिक अर्थपूर्ण पद

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है

मेरा प्रतिउत्तर

दिन 3 बाइबल अध्ययन वचन

सर्वाधिक अर्थपूर्ण पद

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है

मेरा प्रतिउत्तर

दिन 4 बाइबल अध्ययन वचन

सर्वाधिक अर्थपूर्ण पद

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है

मेरा प्रतिउत्तर

दिन 5 बाइबल अध्ययन वचन

सर्वाधिक अर्थपूर्ण पद

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है

मेरा प्रतिउत्तर

दिन 6 बाइबल अध्ययन वचन

सर्वाधिक अर्थपूर्ण पद

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है

मेरा प्रतिउत्तर

दिन 7 बाइबल अध्ययन वचन

सर्वाधिक अर्थपूर्ण पद

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है

मेरा प्रतिउत्तर

ज़्यादा प्रार्थना –
ज़्यादा शक्ति –
ज़्यादा स्तुति !

निवेदन	दिनाँक	उत्तर	दिनाँक

अगुवाई को सीखना

सत्र तीन

आराधना और प्रार्थना

प्रत्येक बिन्दु पर अपने अगुवे से विचार-विमर्श के उपरान्त निशान (✓) लगायें।

अपने अगुवे से मिलने से पूर्व तैयारी:

❑ 1. पढ़ें, **परमेश्वर का सेवक होना**। विचार-विमर्श करने के लिए तैयार रहें कि परमेश्वर का दास अगुवा होने का क्या अर्थ है। परमेश्वर से अपनी प्रार्थनाओं को अपने अगुवे के साथ बाँटने के लिए तैयार रहें (वैकल्पिक)

❑ 2. तीसरे प्रमुख उद्देश्य को पढ़े जो **आराधना और प्रार्थना** है। अपने उत्तरदायित्वों पर विचार करने के लिए तैयार रहें और यह भी कि आपको किस प्रकार से अन्य समूहों में आराधना और प्रार्थना की अगुवाई में अन्य सदस्यों के साथ सहभागिता देनी है।

❑ 3. पढ़ें कि **किस प्रकार सार्थक आराधना और प्रार्थना को प्राप्त करें।** अपनी आराधना तथा प्रार्थना की रणनीतियों को जो आप अपने समूह में पूरा करना चाहते हैं उन्हें अपने अगुवे के साथ विचार करने के लिए तैयार रहें।

अपने अगुवे के साथ पूरा करें:

❑ 4. प्रत्येक अपनी व्यक्तिगत स्तुति और प्रार्थना निवेदनों को बाँटे व समूह के सदस्यों की आवश्यकताओं पर बात करें।

❑ 5. चर्चा करें तथा ऊपर 1 से 3 पर टिक (✓) करें।

इस महीने अपने समूह के साथ बाँटने के लिए योजना:

❑ 6. अगुवे और शिष्य आपस में विचारें और निर्णय लें कि कब, कौन सी रणनीति और कौन आराधना और प्रार्थना के सुझावों को आने वाले सप्ताहों में पूरा करेगा।

तिथि ________ रणनीति ____________ नाम ________________
तिथि ________ रणनीति ____________ नाम ________________
तिथि ________ रणनीति ____________ नाम ________________

तिथि ________ रणनीति ____________ नाम ________________
तिथि ________ रणनीति ____________ नाम ________________
तिथि ________ रणनीति ____________ नाम ________________

प्रार्थना और समापन:

❑ 7. आपस में एक दूसरे के लिए तथा समूह में सदस्यों के लिए प्रार्थना करें।

❑ 8. चौथे कार्यकाल की तैयारी करें।

❑ 9. अगले अगुवाई सत्र में सीखने के लए दिनाँक ____________________
समय ______________ स्थान ____________________________
निर्धारित करें।

❑ 10. अगले सामर्थी वक्तव्य प्रशिक्षण के लिए दिनाँक ____________________
समय ______________ स्थान ____________________________
निर्धारित करें।

परमेश्वर का सेवक होना

परमेश्वर की सेवकाई में एक अगुवा सेवक होने के लिए आपको परमेश्वर का दास बनने की आवश्यकता है। अनेक धार्मिक पद्यांश यीशु को परमेश्वर के सेवक के रूप में वर्णित करते हैं। वह एक सेवक के रूप में परमेश्वर की इच्छा को मानवता के छुटकारे के कार्यरूप में सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए आया। पौलूस ने यीशु की सेवक प्रवृत्ति की व्याख्या की और निम्न प्रकार से हमें भी इसकी आज्ञा दी:

''जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन अपने आपको ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य रूप में प्रकट होकर अपने आपको दीन किया और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हाँ क्रूस की मृत्यु भी सह ली।''

-फिलिप्पयों 2:5-8

हम इसलिए हैं कि मसीह की सेवक प्रवृत्ति को विकसित करें जो दीनता, नम्रता तथा आज्ञाकारिता के लिए पुकारती है। अपने शिष्यों को सेवक-प्रवृत्ति के निर्देशों में यीशु ने सेवकाई में अपनी भूमिका का वर्णन किया: ***''और जो तुममें प्रधान होना चाहे, वह तुम्हारा दास बने। जैसे कि मनुष्य का पुत्र, वह इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाये, परन्तु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करें; और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपने प्राण दे।''*** - मत्ती 20:27-28

उद्धार की बुलाहट उसके साथ धर्म-प्रचार कार्य में लग जाने की बुलाहट है। इस नये सम्बन्ध में आप उस ईश्वर को अपना परमेश्वर और मालिक करके तथा खुद को सेवक के रूप में अर्पित करते हो।

कुछ सेवक को इस रूप में परिभाषित करेंगे: ***''एक सेवक वह है जो यह खोजता है कि उसका स्वामी उससे क्या चाहता है, और वह करता है।''*** स्वामी उसको कहता है, और सेवक स्वयं जाकर उसे करता है। यह परमेश्वर के सेवक के प्रसंग में बाइबल का कोई संप्रत्यय नहीं है। परमेश्वर का सेवक होना इससे भिन्न है। एक मानवीय स्वामी का सेवक अपने स्वामी के लिये कार्य करता है। जबकि परमेश्वर, अपने सेवकों के द्वारा कार्य करता है। मेरी समझ में परमेश्वर और सेवक का सम्बन्ध कुम्हार और मिट्टी की तरह है। यिर्मयाह के पास परमेश्वर का जो वचन पहुँचा वह कहता है ***''उठकर कुम्हार के घर जा, और वहाँ मैं तुझे अपने वचन सुनवाऊँगा। सो मैं कुम्हार के घर गया और क्या देखा कि वह चाक पर कुछ बना रहा है। और जो मिट्टी का बासन वह बना रहा था वह बिगड़ गया, तब उसने उसी का दूसरा बासन अपनी समझ के अनुसार बना दिया। तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा, हे इस्राएल के घराने, यहोवा की यह वाणी है कि इस***

कुम्हार की नाई तुम्हारे साथ क्या मैं भी काम नहीं कर सकता? देख जैसे मिट्टी कुम्हार के हाथ में रहती है, वैसे ही हे इस्राएल के घराने, तुम भी मेरे हाथ में हो।''
-यिर्मयाह 18:1-6

उपयोगी होने के लिए, मिट्टी को लचीला होना होगा और एक बार बर्तन बन जाने के बाद इसे प्रयुक्त होने के लिए कुम्हार के हाथ में रहना होगा। वह साधारण मिट्टी को प्रयोग करता है। मैं खुश हूँ कि परमेश्वर साधारण लोगों को इस्तेमाल करता है जैसे ऐलिय्याह, पतरस और यूहन्ना तथा ड्वाइट एल.मूडी। डी.एल.मूडी एक साधारण, कम शिक्षित, अनियुक्त जूते बेचनेवाला व्यक्ति था जिसने परमेश्वर की सुसमाचार प्रचार की बुलाहट को सुना। एक दिन सुबह-सुबह वह और उनके कुछ मित्र एक सूखे घास के मैदान में प्रार्थना, अंगीकार और पवित्रिकरण के लिये एकत्रित हुऐ। उस प्रार्थना सभा में हेनरी वेरिली ने कहा ''संसार को अभी भी देखना है कि परमेश्वर उस व्यक्ति के द्वारा, जो उसमें पूरी तरह समर्पित हो, क्या क्या कर सकता है।'' मूडी उन शब्दों से अत्यधिक प्रभावित हुआ ''संसार को अभी भी देखना है। के साथ, के लिए, के द्वारा और एक व्यक्ति में।''

बेरिली का अर्थ था कोई भी व्यक्ति। वेरिली ने यह नहीं कहा कि उसे शिक्षित, बुद्धिमान या कुछ और होना आवश्यक है। बस एक व्यक्ति। और पवित्र आत्मा के उसमें होने के द्वारा मूडी भी उन लोगों में से एक हो जायेगा।

डी.एल.मूडी एक साधारण व्यक्ति था जिसकी अभिलाषा थी कि वह पूरी तरह से मसीह में समर्पित रहे। इस एक साधारण जीवन से परमेश्वर ने अनेक आसाधारण कार्य शुरू कर दिये। मूडी आधुनिक समय के महान धर्मप्रचारकों में से एक बन गया अपने जीवन के काफी समय में उसने ब्रिटेन और अमेरिका में जागृति सभाओं में प्रचार किया जहाँ हजारों-हजार लोग मसीह में आये।

क्या परमेश्वर आपके जीवन के द्वारा असाधारण रूप से अपने राज्य के लिये सार्थक कार्यों को कर सकता है?

एक साधारण व्यक्ति वह है जिसे परमेश्वर इस्तेमाल करने के लिये सबसे अधिक पसन्द करता है। पौलूस ने कहा कि परमेश्वर विचारपूर्वक ऐसे कमज़ोर और तुच्छ चीजों की खोज में रहता है क्योंकि इन्हीं के द्वारा वह महानतम प्रताप को प्राप्त करता है। (देखें 1 कुरिन्थियों 1:26-31) तब प्रत्येक जन जान जायेगा कि परमेश्वर ही ऐसा कर सकता है। यदि आप स्वयं को कमज़ोर, सीमित और साधारण महसूस करते हैं तब आप ही वह सबसे अच्छा माध्यम हैं जिसके द्वारा परमेश्वर अपने कार्यों को करता है। एक सेवक के रूप में आपको लचीला होना चाहिए और स्वामी के उपयोग के समय उपलब्ध रहना चाहिए। यद्यपि आप अपने आप को एक साधारण व्यक्ति समझते हो, परमेश्वर आपको तैयार करेगा, और तब वह खुद को इस संसार पर पर प्रकट करने के लिए आपको अपने द्वारा इस्तेमाल करेगा।

''खोजें कि परमेश्वर क्या कर रहा है, और उस में उसके साथ जुड़ जायें।''

क्या आप परमेश्वर के सेवक बनना चाहते हैं ? ____________________

क्या आप यह देखना चाहते हैं कि परमेश्वर उन कार्यों को आपके द्वारा पूरा कर रहा है जो सिर्फ परमेश्वर ही कर सकता है ? ____________________

तब ढूँढे कि स्वामी कहाँ है ____________ यही वह जगह है जहाँ तुम्हें होना चाहिए। खोजें कि स्वामी क्या कर रहा है क्योंकि वही है जो आपको भी करने की ज़रूरत है।

यीशु ने कहा: ***''यदि कोई मेरी सेवा करे, तो मेरे पीछे हो ले, और जहाँ मैं हूँ, वहाँ मेरा सेवक भी होगा, यदि कोई मेरी सेवा करे, तो पिता उसका आदर करेगा।''*** –12:26

यीशु के उदाहरण को अनुसरण करें, पहचानें कि आप कुछ नहीं कर सकते किन्तु परमेश्वर कुछ भी कर सकता है। अभी इसी वक्त प्रार्थनाओं में स्वयं को परमेश्वर के आगे नम्र और दीन करें और इस सत्य को पहचानें।

अपने निश्चित समर्पण और आज्ञाकारिता के लिये उससे प्रतिबद्ध रहें, तब वह आपसे अपनी इच्छानुसार कार्य करवायेगा।

परमेश्वर से एक प्रार्थना को लिखें ____________________

____

____

____

____

____

हेनरी ब्लैकबाये द्वारा लिखित 'एक्पीरिऐंसिंग गॉड' पर आधारित।

आराधना और प्रार्थना

''प्रार्थना को महत्वपूर्ण बनाने का प्रयास न करें—केवल परमेश्वर प्रमुख है। प्रार्थना तभी प्रमुख बनती है जब परमेश्वर प्रमुख बन जाता है। जब परमेश्वर एक आवश्यकता बन जाये तब प्रार्थना भी ज़रूरत बन जाती है। यदि प्रार्थना आपके लिए प्रमुख नहीं है तब यह इस बात का संकेत है कि परमेश्वर भी आपके लिए प्रमुख नहीं हैं।'' - सर्जियो जेरिका

''जितने यहोवा को पुकारते हैं अर्थात् जितने उसको सच्चाई से पुकारते हैं, उन सभी के वह निकट रहता है। वह अपने डरवैयों की इच्छा पूरी करता है और उनकी दोहाई सुनकर उनका उद्धार करता है।''

– भजन संहिता 145:18–19

आराधना: (अगुवा)

- एक या एक से अधिक **गीत अथवा भजनों** को गायें।
- कोई **भजन पढ़ें** या बाइबल का कोई खण्ड पढ़ें।
- उत्तर प्राप्त प्रार्थनाओं के लिए **परमेश्वर से मौखिक उपासना को बाँटें।**
- **परमेश्वर की विशेषताओं पर एकाग्र होना।**
- यदि उचित हो तो **प्रभु भोज को बाँटें।**
- प्रत्येक को सहभागिता के लिए **प्रेरित करें।** घेरे के चारों ओर प्रार्थना **न करें** और वक्तव्य न करें न किसी को व्याकुल करें।

प्रार्थना: (शिक्षक अथवा अगुवा)

- वार्तालापी प्रार्थनाएं (संक्षिप्त, वाक्य प्रार्थनाऐं)
- प्रत्येक को हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित करें किन्तु किसी पर दबाव न डालें।
- संक्षिप्त में निवेदनों को अथवा प्रार्थनाओं के प्रत्युत्तरों को पूंछें। (निवेदनों तथा उत्तर को दर्ज करें) (देखें उदाहरण)
- एक दूसरे के लिए और उन विशेष विषयों के लिए भी प्रार्थना करें।
- सप्ताह के दौरान एक दूसरे के लिए प्रार्थना करें।
- अपने परिवार और मित्रों के लिए नाम-बनाम प्रार्थना करें।
- उन अवसरों की गवाही के लिए प्रार्थना करें जो आपके **अधिकार की सीमा में है।**
- जीवन समूह अथवा बाह्य घटनाओं में निमन्त्रित होने पर संभाव्य परिणामों के लिए प्रार्थना करें।

सार्थक समूह प्रार्थना को कैसे प्राप्त करें

''और हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और विनती करते रहो, और इसीलिए जागते रहो, कि सब पवित्र लोगों के लिए लगातार विनती किया करो।''

–इफिसियों 6:18

आपके समूह का प्रार्थना समय आपमें से प्रत्येक के लिए अत्यधिक प्रमुख और उत्साहवर्द्धक हो सकता है। कुछ लोगों के लिए हमेशा ही प्रार्थनाओं का ऐसा अनुभव नहीं होता। अकसर ऐसा इसलिए होता है क्योंकि उनका प्रार्थनाओं में परमेश्वर से कोई व्यक्तिगत सम्बन्ध नहीं होता। आपके पास एक उत्तेजक अवसर है कि आप अपने समूहों में सिखाएं कि परमेश्वर से व्यक्तिगत रूप में किस प्रकार से बात करें, जैसा कि वह वास्तव में वहाँ उपस्थित था और अवश्य ही वह है।

संवादी प्रार्थनाएं

मैं आपको सुझाव देने जा रहा हूँ कि कैसे आप अपने समूह को वार्तालापी प्रार्थना करना सिखा सकते हैं। वार्तालापी प्रार्थनाएं साधारण रूप से परमेश्वर के साथ बात करना है इसकी जगह कि प्रत्येक अपनी ''प्रार्थना भाषा'' को परमेश्वर से स्थापित करे यह देखें कि आपकी प्रार्थनाएं समूह के अन्य सदस्यों के लिए भी परमेश्वर से उस पर वार्ता करने का अवसर हों। एक व्यक्ति संक्षेप में प्रार्थना करने के लिए एक विषय ला सकता है। अगला व्यक्ति, दूसरे विचार की ओर जाने के स्थान पर, इसी विषय पर प्रार्थना करने के लिए इसे चुन सकता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि समूह के प्रत्येक सदस्य को उस विषय पर आगे-पीछे प्रार्थना करने का अवसर तब तक प्रदान किया जाये जब तक सभी उसमें सहभागिता करते हैं और जब तक सभी उस विषय पर प्रार्थना न कर लें। तब कोई अन्य व्यक्ति किसी दूसरे विषय को प्रार्थना के लिए चुन सकता है।

निम्न उदाहरण स्वैच्छिक संवादी प्रार्थना को चित्रित करता है:

- एक व्यक्ति प्रारम्भ कर सकता है, ''परमेश्वर, मैं आपसे प्रेम करता हूँ''
- दूसरा आगे कहे, ''आपका धन्यवाद कि आज आप यहाँ उपस्थित हैं और हम यह जानकर कि आप हमें सुनते हैं, आपसे बात कर सकते हैं।''
- अन्य प्रार्थना करता है, ''आपके उस प्रेम के लिए धन्यवाद कि आपने प्रभु यीशु को मेरे पापों के लिए मरने के लिए भेज दिया।''
- दूसरा भजन से पढ़े, ''प्रभु महान है और महान रूप से प्रशंसनीय है...''
- अन्य थोड़ा जोड़ सकता है, ''प्रभु मैं स्वीकारता हूँ कि आज रात मैं यहाँ नहीं आना चाहता था, किन्तु मैं धन्यवाद देता हूँ कि मैं यहाँ हूँ, और इसलिए कि आपने पहले ही मुझसे बातें कीं।''

- दूसरा निवेदन करता है, ''मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप ही मेरे मित्र, जिम को अपनी निकटता में ले आएंगे ताकि वह नये जन्म को अनुभव कर सके और आपके लिए एक प्रमुख गवाह और शिष्य बन सके।''
- दूसरा सहमति दर्शाता है, ''पिता मैं इस प्रार्थना से सहमत हूँ। हमें बताऐं कि किस प्रकार हम उस तक पहुँचे और शीघ्र ही सुसमाचार में लाऐं...'' और इसी प्रकार।

आपकी प्रार्थना-समय के लिए कार्य संरचनाः

- जो परमेश्वर है इसके लिए उसका धन्यवाद हो, उसकी भलाई और उसके प्रेम के लिए, हमारी समस्त आवश्कयताओं की पूर्ति हेतु उसकी योग्यताओं के लिए, अनन्त जीवन के लिए और हमारी प्रार्थनाओं के व्यक्तिगत उत्तरों के लिए।
- प्रार्थनाओं के प्रत्युत्तरों के लिए परमेश्वर की स्तुति करें तथा दूसरों की आवश्यकता के लिए प्रार्थना करें। समूह के सदस्यों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए साथ मिलकर प्रार्थना करें, पारिवारिक आवश्यकताओं के लिए, अपनी कलीसिया के अगुवों और धर्म-प्रचारकों के लिए और अन्य वर्णित आवश्यकताओं के लिए प्रार्थना करें। उनके उद्धार के लिए प्रार्थना करें जिनके साथ आपका सम्पर्क हो। पूरे संगठन, राष्ट्र और संसार की आत्मिक जागृति के लिए प्रार्थना करें।
- अपनी आवश्यकताओं के लिए प्रार्थना करें।
- परमेश्वर द्वारा प्रार्थनाओं को सुनने और प्रत्युत्तर देने के लिए अपनी भक्ति को प्रदर्शित करें।
- सप्ताह से सप्ताह में कार्य संरचना को परिवर्तित करें:
  – सम्पूर्ण समूह के रूप में एक साथ प्रार्थना करें
  – अत्याधिक घनिष्ठता के लिए छोटे समूह तैयार करें, समूह को दो समूहों में या 3 अथवा 4 स्त्री पुरुष के संयोग से या पृथक रूप से स्त्री-पुरुष अलग-अलग करके समूह निर्माण करें।

प्रार्थना-मार्गदर्शक

1. अनेक युवा प्रार्थना की आवश्यकता को महसूस करते हैं किन्तु समूह में ज़ोर से प्रार्थना करने में हिचकिचाते हैं। आपको उन्हें उत्साहित करने के लिए प्रारम्भ में सहायता करने की आवश्यकता हो सकती है।

- प्रार्थना की आवश्यकता पर ज़ोर देना बहुत महत्वपूर्ण है।
- सभी ज्ञात पापों के अंगीकार के महत्व पर विचार-विमर्श करें-इसे परमेश्वर के समक्ष रखें और उसे उसके क्षमादान के लिए धन्यवाद दें।
- इस विषय पर चर्चा करें कि परमेश्वर को प्रत्येक चीज़ के लिए जो वह हमारे जीवनों में प्रदान करता है, धन्यवाद देना कितना महत्वपूर्ण है।
- उन्हें ऐसी प्रार्थनाओं को करने के लिए प्रेरित करें जो गम्भीर, संक्षिप्त और उनके विश्वास

को प्रतिबिम्बित करें।

- जब कभी भी उन्हें परमेश्वर से बात करने की आवश्यकता लगे ऐसा करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें।
- परमेश्वर में उनकी जागरूकता के प्रति उनकी भावुकता को विकसित करें।
- जब वे अकेले हों तब उन्हें ज़ोर से प्रार्थना करने के लिए उत्साहित करें ताकि वह स्वयं अपनी प्रार्थना की आवाज़ को सुन सकें।
- उन्हें अपनी प्रार्थनाओं को लिखने के लिए और समूह में लाकर बाँटने के लिए उत्साहित करें।

2. घेरे में प्रार्थना करने की तुलना में, जो भी स्वयं प्रार्थना करना चाहे, उसे ऐसा करने दें।

3. खामोशी से घबरायें नहीं। परमेश्वर को आपसे बात करने का अवसर देने के लिए बीच-बीच में थोड़ा विराम दें।

4. प्रत्येक प्रार्थना को एक या दो वाक्यों तक सीमित रखें किन्तु प्रत्येक व्यक्ति को उतनी बार प्रार्थना करने दें जैसा उन्होंने करने के लिए चुना है।

5. याद रखें कि मसीह यीशु वास्तव में उस कमरे में उपस्थित है। वह मत्ती 18:19-20 में वायदा करता है, ''फिर मैं तुमसे कहता हूँ, यदि तुममें से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिए जिसे वे माँगें, एक मन के हों, तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है उन के लिए हो जायेगी। क्योंकि जहाँ दो या तीन मेरे नाम से इकट्ठे होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच में होता हूँ।''

6. आप अपनी निवेदन प्रार्थनाओं को दे सकते हैं या प्रार्थना समय के बाद उन पर विचार-विमर्श कर सकते हैं या फिर साधारण रूप से वास्तविक प्रार्थना समय में प्रार्थना द्वारा उन्हें ज्ञात कर सकते हैं। अन्य लोग आपकी निवेदन प्रार्थनाओं में जुड़ सकते हैं। यदि आपके मन में अन्य निवेदन आयें तो उन्हें भी जोड़ने के लिए अपने आपको स्वतन्त्र महसूस करें।

7. भिन्नता के लिए, बाइबल का एक खण्ड लें और परमेश्वर से इसके लिए प्रार्थना करें कि वह इसे आपके शब्दों में पुन: वर्णन करें।

   उदाहरण: भजन संहिता 145:
   एक व्यक्ति एक वचन पढ़ता है: ''हे मेरे परमेश्वर, हे राजा, मैं तुझे सराहूँगा और तेरे नाम को सदा सर्वदा धन्य कहता रहूँगा। धन्यवाद कि आप मेरे परमेश्वर और मेरे राजा हैं। आज के दिन आपके नाम की प्रशंसा करना आनन्द की बात है और मैं अनन्तकाल तक ऐसा ही करूँगा।'' और दूसरा व्यक्ति वचन को और आगे पढ़ सकता है और

परमेश्वर से प्रार्थना में अभिव्यक्तिकरण कर सकता है और समय हो तो भजन को आगे भी पढ़ सकता है। आप इसे एक साथ करने पर आनन्दित होंगे—एक बार प्रयास करें।

8. इसी प्रकार से, आप किसी प्रमुख निवेदन के लिए बाइबल में दिये गये विशिष्ट वचनों पर आधारित प्रार्थना करना चाह सकते हैं:

- बीमार और अत्यधिक बोझ से दबे हुओं के लिए-आकस्मिक- याकूब 5:14,15; 1 पतरस 1:5
- हमारे ऊपर अधिकारियों के लिए-सरकार, कलीसिया-तिमु. 1:1-6; रोमियों 13:1
- उद्धार के लिए निवेदन-रोमियों 10:1; यूहन्ना 14:12,13; 2 पतरस 3:9
- साथी विश्वासियों के लिए-चरवाहे-इफिसियों 3:14-20; कुलुस्सियों 1:9-12
- फसल काटने के लिए मज़दूरों के लिए- हैं और आवश्यकता है- मत्ती (9:37,38; रोमियों 10:13-15)

9. अपने निवेदनों और उत्तरों को दर्ज करें।

ऐसा महसूस नहीं करें कि आपको तुरन्त समस्त विचारों को पूरा करना ही है किन्तु प्रार्थना को प्रमुख और व्यक्तिगत रखने के लिए तरीकों में थोड़ी भिन्नता लाएें। प्रार्थना की इस रणनीति को पूरा करने में और लोगों को सहभागी करने के लिए भी याद रखें। यह भविष्य के अगुवों के प्रशिक्षण का एक हिस्सा है।

ज़्यादा प्रार्थना -
ज़्यादा शक्ति -
ज़्यादा स्तुति !

निवेदन	दिनाँक	उत्तर	दिनाँक

अगुवाई को सीखना

सत्र चार

जीत

प्रत्येक बिन्दु पर अपने अगुवे से विचार-विमर्श के उपरान्त निशान (✓) लगायें।

अपने अगुवे से मिलने से पूर्व तैयारी:

❑ 1. पढ़ें-**एक सेवक अगुवे का हृदय**। यह वर्णन करने के लिए तैयार रहें कि एक अगुवे का ईमानदार होना क्यों आवश्यक है तथा प्रेम और विश्वास का क्या महत्व है। साथ ही सम्बन्धों के चारों स्तरों की भी व्याख्या करें।

❑ 2. पढ़ें-**जीत**। यह बाँटने के लिए सदैव तैयार रहें कि हमारे समूह का बाहर निकलना क्यों महत्वपूर्ण है।

❑ 3. **लोग लोगों तक पहुँच रहे हैं** को पढ़ें और पूरा करें। अपने अगुवे के साथ बाँटने के लिए तैयार रहें उन लोगों के नामों को जिन्हें आपने अपने प्रभाव मण्डल में से चुना है। साथ ही धर्म प्रचार में भूमिका प्रार्थना की व्याख्या भी करें।

आपके अगुवे के साथ पूरा करें:

❑ 4. प्रत्येक यह बाँटे कि इस माह में परमेश्वर ने आपके जीवन में किस प्रकार कार्य किया।

❑ 5. विचार विमर्श करें तथा 1 से 3 बिन्दु पर टिक (✓) करें।

इस महीने हमारे समूह के साथ बाँटने की योजना:

❑ 6. लोग, लोगों तक पहुँच रहे हैं की प्रतिलिपियां प्रत्येक व्यक्ति को प्रदान करें। उन 7 लोगों को पहचानने के लिए जिन्हें वह प्रार्थना के लिए लाएंगे अपने समूह के सदस्यों को तैयार करें।
तिथि ________________ नाम ________________________________

❑ 7. जिन लोगों को उन्होंने चुना है उनके लिए निरन्तर प्रार्थना करें। निर्धारित करें कि समूह के सामने इसे रखने के लिए कौन उत्तरदायी होगा।
नाम ________________________________

प्रार्थना और समापनः

- ❑ 8. आपस में एक दूसरे के लिए तथा समूह में सदस्यों के लिए प्रार्थना करें।

- ❑ 9. पाँचवें कार्यकाल की तैयारी में जुट जाऐं।

- ❑ 10. निर्धारित करें एक तिथि ____________ समय ____________ स्थान ______________________ अगली अगुवाई कार्यकाल में हमारे सीखने के लिए।

- ❑ 11. निर्धारित करें एक तिथि ____________ समय ____________ स्थान ______________________ हमारे अगले सक्रिय वक्तव्य प्रशिक्षण के लिए।

एक दास अगुवे का हृदय

चरित्र का निर्माण, हृदय का विकास है

हृदय पर सेवकाई निभाने की प्रक्रिया

हृदय का विकास करने के लिए हमें अनुग्रह, सत्य तथा प्रेमपूर्ण सेवक तथा हृदय के पोषण को समझना आवश्यक है।

हम समय तथा सम्बन्धों के बीच अपने आन्तिरिक चरित्र (हृदय) का विकास करते हैं।

''सेवकाई सम्बन्धों से बढ़ती है'' –अल ब्रूम

दास अगुवे के सम्बन्ध को बढ़ाने के लिए:

1. प्रेम का होना, यूहन्ना 3:16 आधारित प्रेम का होना आवश्यक है।
   ''चाहे तुम मुझे कितना भी प्रेम करो, तुम मुझे केवल उतना ही प्रेम कर सकते हो जितना मैं तुम्हें मुझे प्रेम करने देता हूँ।''

2. भरोसा होना चाहिए।
   ''चाहे तुम मुझे कितना भी चाहते हो, मैं तुम्हें मुझे उतना ही प्रेम करने दूँगा जितना मैं तुम पर भरोसा करता हूँ।''

3. भरोसा होने के लिए ईमानदारी का होना ज़रूरी है।
   ''ईमानदारी हृदय का आधार है। यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें आप सम्पूर्ण, बिना दाग के तथा पूरे होते हैं।''

ईमानदारी दूसरों को भरोसा करने के लिए उत्साहित करती है
ईमानदारी मेरा एक ऐसा गुण है जो मुझे आपका भरोसा प्राप्त करने में सहायता करती है।

ईमानदारी का विकास करना
उद्‌घोषणा करना सीखना है कि मैं क्या कर सकता हूँ (और नहीं कर सकता हूँ)।
उद्‌घोषणा करना सीखना है कि मैं क्या हूँ (और क्या नहीं हूँ)
हमारी ईमानदारी लगातार परखी जाती है।

ईमानदारी कैसे परखी जाती है

- चुनौती हमारे अन्दरूनी विवेक में उत्पन्न होगी।

- परमेश्वर ऐसी परीक्षा लेता है जिसमें मैं जवाब दे सकूँ।
- मैं परख का जवाब ईमानदारी से देता हूँ या नहीं।
- जब मैं इस ईमानदारी की परख से पास हो जाता हूँ तो परमेश्वर दूसरी सच्चाईयों को पार करने के मुझे और भी अवसर देता है।
- जिस हृदय में ईमानदारी का अभाव है वह सच्चाई का प्रतिउत्तर नहीं दे सकता।

सम्बन्ध बढ़ने में समय लेते हैं

4. सम्बन्धों में परिपक्वता की प्रक्रिया

सम्बन्ध स्तर-1
मैं अपनी ज़रूरतों को नहीं जानता
मैं नहीं जानता आप कैसा भरोसा चाहते हैं।
आपका मेरे जीवन में कोई स्थान नहीं है।

सम्बन्ध स्तर संख्या-2
मैं जानता हूँ कि मुझे ज़रूरते हैं।
मैं नहीं जानता कि मैं आप पर भरोसा कर सकता हूँ या नहीं।
जो चीज़ मैं आपको दिखाना चाहता हूँ वहाँ तक आपकी पहुँच है।

सम्बन्ध स्तर संख्या-3
मैं चाहता हूँ कि आप मेरी शर्तों के अनुसार मेरी ज़रूरतों को पूरा करें।
मैं आप पर भरोसा करना सीख रहा हूँ।
आपका मेरे जीवन में एक सीमित स्थान है।

सम्बन्ध स्तर संख्या-4
मुझे ज़रूरत है कि आप अपनी इच्छा के अनुसार मेरी ज़रूरतों को पूरा करें।
मैं आप पर भरोसा करता हूँ।
आपका मेरे जीवन पर पूर्ण अधिकार है।

5. अधीनता होना आवश्यक है। अधीनता, प्रेम व भरोसे का प्रतिउत्तर है
   - अधीनता कोई तुलना करने का मुद्दा नहीं है-यह आपकी सुरक्षा के तहत आता है
   - अधीनता कोई अधिकार, मुद्दा नहीं है-यह आपके प्रयोजन पर आधारित है
   - अधीनता कोई नियन्त्रण करने का मुद्दा नहीं है-यह ज़िम्मेदारी से छुटकारा है।

हमारे जीवन समूह के सम्बन्धों में हमें, सम्बन्धों के 4 स्तर को लक्ष्य मानकर चलना चाहिए, जहाँ पर सम्पूर्ण भरोसे का माहौल हो तथा जहाँ पर हम सबको अपने जीवन में स्थान दे सकें।

अपने समूह के बारे में सोचें। क्या हमारे पास 4 स्तर का वातावरण है? ____________

अपने समूह में इस प्रकार के वातावरण को बढ़ाने के लिए हम क्या कर सकते हैं?

____

* डा. बिल थ्राल तथा डा. ब्रूस मैक्निकोल द्वारा लिखित अगुवों के गुणों को देखें।

जीतना

लोगों को उत्साहित तथा तैयार करना कि वह मसीह के लिए दूसरों तक पहुँच सकें।

इस संसार में हमारे जीवित रहने का एक मात्र उद्देश्य यह है कि हम दूसरों को मसीह के बारे में बता सकें। इस पीढ़ी के अन्दर, एक मसीही घर, सुसमाचार सुनाने के लिए एक सबसे बड़ा औजार है।

''और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं जिसने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल मिलाप कर लिया, और मेल मिलाप की सेवा हमें सौंप दी।'' -2 कुरिन्थियों 5:18

''परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरुशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।'' -प्रेरितों के काम 1:8

''यीशु ने उनके पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इस लिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी हैं मानना सिखाओ और देखो मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे साथ हूँ।''
-मत्ती 28:18-20

जीतना-सुसमाचार सुनाना- इस्तेमालः (अगुवा)
- व्यक्तिगत प्रचार को नमूना बनाएं
- लोगों को उत्साहित करें कि वह ज़रूरतमन्दों की सहायता करने के अवसर की खोज करें।
- अपने जान पहचान वाले लोगों के लिए, जिन पर आपका अच्छा प्रभाव है व्यक्तिगत रूप में प्रार्थना करने हेतु उत्साहित करें।
- प्रत्येक को उत्साहित करें कि वह गैर मसीहियों के साथ अच्छे सम्बन्ध को स्थापित करें।

- प्रत्येक को उत्साहित करें कि वह अपने विश्वास को अपने परिवार, मित्र तथा पड़ोसियों के बीच में बाँटे।
- प्रत्येक को उत्साहित करें कि वह जीवन समूह या प्रचार कार्यक्रम में किसी मित्र को ज़रूर से बुलाएं (जिन लोगों को आमन्त्रण दिया जाता है उनके लिए नाम लेकर प्रार्थना करें)।

प्रचार कार्य के लिए कुछ उपलक्ष्य इस प्रकार से हैं: खेल की रात, संगीतमय शाम या नाटक, जवानों की रैली, समुन्द्र के किनारे पार्टी, फिल्म रात्री (उदाहरण-ज़ीज़स, विवाह या अभिभावकता) या फिर खास कार्यक्रम जैसे क्रिसमस, ईस्टर, सरकारी छुट्टी, खेल का कार्यक्रम इत्यादि।

- किसी मिशनरी को चुने, जिसको आपके चर्च द्वारा, संख्या द्वारा, या किसी मित्र, पड़ोसी, रिश्तेदार या किसी समूह के लोगों द्वारा सहायता दी जा रही हो–
  - उनके लिए लगातार प्रार्थना करें।
  - उनके साथ फोन, फैक्स, ई-मेल या पत्र द्वारा लगातार सम्बन्ध बनाये रखें।
  - हो सकता है एक समूह होने के नाते आप उन्हें सहायता करना चाहते हों या राष्ट्रीय चर्च संस्थापक उन्हें प्रशिक्षित करना चाहते हों।
  - अगर सम्भव हो तो उनसे जाकर मिलें।
  - हो सकता हैं आपका चर्च या आपका समूह ''अल्पकालीन मिशन कार्यक्रम के लिए किसी दल को भेजना चाहें।''

- सहायता के लिए डायनामिक अर्न्तराष्ट्रीय चर्च से सम्पर्क करें। हम आपके लिए सूचनाएं भेजने तथा आपके दल को शिक्षा देने व तैयार करने में आपकी सहायता करेंगे ताकि आपको आनन्ददायक तथा फलदायक योजना मिल सकें।

लोगों का दूसरे लोगों तक पहुँचना

ध्यान दें-निम्नलिखित बातें हमारे समूह के सदस्यों की उनके प्रभावशाली क्षेत्रों को पहचानने में सहायता करेंगी।

मसीह के लिए दूसरों को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण सिद्धान्त

कुलुस्सियों 4:2-6

''प्रार्थना में लगे रहो और धन्यवाद के साथ उसमें जागृत रहो और इसके साथ ही साथ हमारे लिए भी प्रार्थना करते रहो कि परमेश्वर हमारे लिए वचन सुनाने का ऐसा द्वार खोल दे कि हम मसीह के उस भेद का वर्णन कर सकें जिसके कारण मैं कैद हूँ। और उसे ऐसा प्रगट करूँ जैसा मुझे करना चाहिए। अवसर को बहुमूल्य समझकर बाहरवालों के साथ बुद्धिमानी से बर्ताव करो। तुम्हारा वचन सदा अनुग्रह सहित और सलोना हो, कि तुम्हें हर मनुष्य को उचित रीति से उत्तर देना आ जाए।''

आपके प्रभाव का क्षेत्र-आपके सोचने से भी बढ़कर है!

आपका प्रभाव उन लोगों पर हैं जिन्हें आप जानते हैं तथा जिन्हें जानने की क्षमता आपमें हैं। जिन लोगों को आप जानते हैं वह लोग सीधे सीधे आपके प्रभाव में आने वाले लोग हैं। हो सकता है जिन लोगों पर आप अपनी सेवा को निभाते हैं उनसे आप प्रतिदिन मिलते भी हो। जबकि दूसरे लोगों के साथ आपका मिलना कुछ महीनों में या फिर साल में एक बार भी होता हो। ऐसे लोग जिनके साथ आपकी जान पहचान नहीं है, परन्तु संभावनाएं हैं कि आप उनसे मिल सकें, ऐसे लोगों पर अपनी अधिक सेवा को निभाएं। उदाहरण के लिए, किसी समुदाय का एक सदस्य या एक मित्र का मित्र आपकी सेवकाई का अगला लक्ष्य होना चाहिए।

सीधे प्रभाव के उदाहरण

1. इन्द्रीयास को मसीह के पास कौन लाया? यूहन्ना 1:35-42 ____________
2. फिलिप्पुस को मसीह के पास कौन लाया? यूहन्ना 1:43-49 ____________

आपके सीधे प्रभाव का क्षेत्र

हममें से ज़्यादातर लोग अपने प्रभाव के क्षेत्र के दायरे को नहीं पहचानते। उस सूत्र का इस्तेमाल करें जिसमें आपको उन गैर मसीहियों की संख्या को जोड़ना है जो आपके पहचान वाले हैं। रिश्तेदार + सहकर्मी + पड़ोसी + मित्र + जान पहचान वाले + ____________ + ____________ + ____________ + ____________ + ____________

उपरोक्त लोगों का योग: ____________ **(कुल योग 4)**

यदि इनमें से 7 लोग मसीह को गृहण करके अपने पहचान के लोगों में मसीह का सुसमाचार सुनाते हैं, तो आप उनके द्वारा कितने लोगों तक सेवा निभा सकते हैं?

पहला कुल योग 4 x **7** = + ________ **(योग बी)**
(ए) ________ + **(बी)** ________ = ________

परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह उन लोगों को आपके मन में डाले जिन लोगों के हृदय को परमेश्वर तैयार कर रहा है और जब ऐसा होता है तो आप इस बात को पहचानें कि वह चाहता है कि आप उनके उद्धार में उसके साथ शामिल हों। सर्वप्रथम हमें इन व्यक्तियों के लिए प्रार्थना करनी है।

जब हम अपनी पहचान के लोगों की संख्या को जोड़ते हैं तो उस समूह का योग ________ हो जाता है!

प्रार्थना के साथ में 7 लोगों को चुनें। जैसे-जैसे परमेश्वर आपकी अगुवाई करता है वैसे-वैसे पहले, फिर दूसरे के लिए प्रार्थना करें। प्रत्येक के साथ मसीह की शिक्षा बताने के लिए जागरूक रहें।

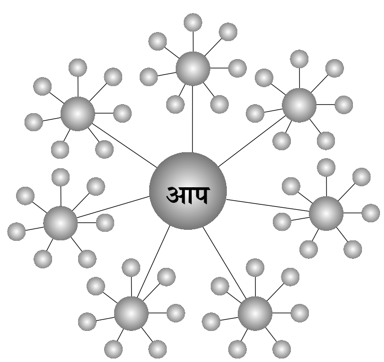

मैं निरन्तर इन लोगों के लिए प्रार्थना करूँगा:

1. ________ 2. ________
3. ________ 4. ________
5. ________ 6. ________
7. ________

जब इन लोगों में से कोई जन परमेश्वर को ग्रहण करता है तो उस स्त्री/पुरुष की उसके प्रभाव में आने वाले लोगों तक पहुँचने में सहायता करें।

अपने समूह में इन लोगों के लिए निरन्तर प्रार्थना करें।

उद्धार नहीं पाये हुए मित्रों के लिए प्रार्थना

हम सभी की जान पहचान वाले बहुत से लोग हैं। जिनमें बहुत से मसीही हैं व बहुत से नहीं हैं। एक समूह होने के नाते हमारे पास जान पहचान या सेवा निभाने का एक बहुत बड़ा क्षेत्र है। हमें उन लोगों को पहचानने की ज़रूरत है जो मसीह को नहीं जानते परन्तु हम उन्हें जानते हैं ताकि हम उनके लिए प्रार्थना कर सकें तथा उनके साथ परमेश्वर के सुसमाचार को बाँट सकें।

भटके हुए लोगों के लिए कैसे प्रार्थना करें

तीन दिशाएं हैं जिनमें हमारी प्रार्थनाएं होनी चाहिए:

(अ) शैतान के ख़िलाफ-जो पापियों पर कब्ज़ा करने वाली शक्ति है।

1. पढ़ें 2 तिमुथियुस 2:25,26। एक पापी, शैतान के द्वारा ________ है।
2. पढ़ें 2 कुरिन्थियों 4:2,4। पापी, सुसमाचार के प्रति ________ है।

इससे पहले कि एक भटका हुआ व्यक्ति बच सके, दो बातें ज़रूर होनी चाहिए।

1. पढ़ें 2 कुरिन्थियों 10:4, वह ________ से स्वतन्त्र होना चाहिए।
2. पढ़ें 1 कुरिन्थियों 2:4,5 कौन प्रकाश देगा? ________

किसी मित्र या आपके नज़दीकी जन के बारे में विचार करें जो सुसमाचार के प्रति विरोध प्रगट करता है। शैतान कैसे: ________

उसे (स्त्री/पुरुष) बान्धता है? (उदाहरण, दोस्ती छोड़ने के द्वारा, कोई आनन्द नहीं है)
यह ऐसे दृढ़ गढ़ हैं जिन पर हम बिचवई की प्रार्थना के द्वारा विजय प्राप्त कर सकते हैं।

(आ) मसीहियों की दिशा में

परमेश्वर एक पापी को तैयार करता है, फिर वह एक मसीही से बात करके उन दोनों को मिला देता है। हमें ऐसे मसीहियों की ज़रूरत है जो परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल किये जाने के इच्छुक हों, कि दूसरों में कलाम सुना सकें।

मत्ती 9:37-38 में यीशु ने अपने चेलों को किस प्रकार से निर्देश दिए? ________
____

इसी प्रकार से आज भी परमेश्वर कार्य करता है।

(इ) हमारे उद्धारकर्ता की दिशा में

पढ़ें यूहन्ना 6:44। जब तक परमेश्वर पश्चाताप को स्वीकार न करें तब तक कोई भटका हुआ व्यक्ति शैतान के फन्दे से बच नहीं सकता। 2 तिमुथियुस 2:25,26

खोये हुओं के लिए प्रार्थना करें
यही वह तरीका है जिसके तहत परमेश्वर आपसे किसी व्यक्ति के उद्धार के लिए प्रार्थना करने को कहता है। शैतान के ऊपर यीशु मसीह के नाम में अपने अधिकार का प्रयोग करें। शैतान मानना चाहिए। उसे झुकना ही है। परमेश्वर आपकी प्रार्थना के जवाब में साक्षियों को खड़ा करेगा। परमेश्वर का आत्मा भटके हुए को कायल करके अपने नज़दीक लायेगा तथा उसे प्रायश्चित करने का अवसर देगा। यदि आप यीशु से प्रार्थना करें तो यीशु उसके दिल के दरवाज़े पर खटखटायेगा।

यहाँ पर रुककर उस मित्र और प्रियजन के लिए प्रार्थना करें।

अगुवाई को सीखना

सत्र पाँच

जीतना

प्रत्येक बिन्दु पर अपने अगुवे से विचार-विमर्श के उपरान्त निशान (✓) लगायें।

अपने अगुवे से मिलने से पूर्व तैयारी:

❑ 1. अपने **जीवन को पुनः उत्पादन** करना को पढ़ें। नये समूह को जन्म देने की प्रक्रिया को वर्णन करने हेतु तैयार रहें।

- हमारे नये समूह को प्रारम्भ करने की तिथि क्या होगी ? दिनाँक ____________

- अपने समूह की अगुवाई करने के लिए प्रार्थना के साथ खुद को तैयार करें।

❑ 2. अपने **नवअगुवे को चुनना** को पढ़ें। क्या आपने कि नवअगुवे के चुना है ?

____________ कौन ? ________________ क्यों ? ______________

❑ 3. **जीतें। मेरे संसार के लिए दर्शन** को पढ़ें। दूसरों तक मसीह के वचन को पहुँचाने में मेरे समर्पण को बाँटने हेतु तैयार रहें। यह बतायें कि किस प्रकार से सामर्थी वक्तव्य प्रशिक्षण ने आपको साक्षी बाँटने के लिए आत्म बल दिया है।

❑ 4. **जीतें। मेरे संसार तक पहुँचने के लिए प्रायौगिक रणनीतियों** को पढ़ें। हमारा समूह किन रणनीतियों को मिलकर करना पसन्द करता है ?

❑ 5. **जीतें। जीवन शैली के रूप में साक्षी कैसे दें,** पढ़ें। अपने अगुवे के साथ, जीवन शैली से साक्षी के एक व्यक्तिगत उदाहरण को बाँटने के लिए तैयार रहें।

अपने अगुवे के साथ पूरा करें:

❑ 6. हर एक जन बाँटे कि जब आपने दूसरे को साक्षी दी तो परमेश्वर ने आपको कैसे आशीष दी।

❑ 7. बिन्दु 1 से 5 तक की जाँच व चर्चा करके निशान (✓) लगाएं।

इस महीने अपने समूह के साथ बाँटने के लिए तैयारीः

- ❑ 8. अगुवा अपने समूह के साथ नये समूह को खड़ा करने की योजना पर बात करना शुरु कर देता है। जैसे जैसे यह योजना विकास करती है अपने समूह से प्रार्थना करने के लिए कहें। दिनाँक ______________

- ❑ 9. सामुहिक तौर पर सुसमाचार सुनाने के लिए रणनीति की चर्चा तथा चुनाव करें। अनेक प्रकार की ज़िम्मेदारियों को पूरा करने के लिए एक दिनाँक को निर्धारित करें।

- ❑ 10. अपनी जीवन शैली से ही साक्षी प्रगट करने के लिए उत्साहित करें। जिन लोगों पर आपका अच्छा प्रभाव है उनके लिए सामुहिक रूप से निरन्तर प्रार्थना करें। समूह के सदस्यों को उनकी प्रार्थनाओं के परिणाम को लोगों के बीच साक्षी के रूप में रखने के लिए कहें।

प्रार्थना तथा समापन

- ❑ 11. समूह के सदस्यों की ज़रूरतों तथा व्यक्तिगत ज़रूरतों के लिए प्रार्थना करें।

- ❑ 12. अध्याय छः के लिए तैयारी हेतु पाठ्य-सामग्री पर नज़र डालें।

- ❑ 13. अगले **अगुवाई करना सीख रहे हैं** सत्र के लिए दिनाँक ______________ समय ______________ तथा स्थान ____________________ निर्धारित करें।

- ❑ 14. अगले सामर्थी वक्तव्य प्रशिक्षण के लिए दिनाँक ______________ समय ______________ तथा स्थान ____________________ को निर्धारित करें।

हमारे जीवन समूह का पुनः उत्पादन

जीवन समूहों की सेवकाई के द्वारा हम संबंधों और प्रचार के माध्यम से हमारे समाज को शुद्ध करने के लिए समर्पित हैं। जैसे-जैसे हमारे जीवन समूहों के सदस्य अपने समाज तक परमेश्वर के वचन को पहुँचाने में अधिक प्रभावशाली हो जाएंगे तो समाज में आत्मिकता तथा गिनती में बढ़ौतरी होगी। नये लोग लगातार जुड़ते चले जाएंगे। विकास की इस दर को निरन्तर बनाए रखने के लिए समूहों को दूसरे समूहों को जन्म देना या पुनः उत्पादन करना आवश्यक होगा।

जो समूह पुनः उत्पादन नहीं करता वह धीरे-धीरे उदासीन हो जाता है। वह उस शुद्धता की चरम सीमा तक पहुँचने के बावजूद पतन की ओर बढ़ने लगते हैं। वह केवल आत्म सेवा पर केन्द्रित तथा ऐसे लोग बन जाते हैं जो केवल अपनी ज़रूरतों को ही पूरा करना चाहते हैं। इस प्रकार के वातावरण में नये आगंन्तुक अपनापन महसूस नहीं करते। इसके अलावा लोग एक दूसरे पर या अपने अगुवे पर ज़्यादा भरोसा करने लगते हैं, बजाए परमेश्वर पर भरोसा करने के। किसी भी समूह के अन्दर 'अत्यधिक आरामदायक स्थिति' को महसूस करना तथा स्वयं के विद्यमान होने के मकसद को भूल जाना संभव है। जीवन समूह सदैव दूसरों की सेवा करने के लिए तैयार होना चाहिए। हमारे जीवन के लिए परमेश्वर का यही उद्देश्य है। उनके अगुवे होने के नाते अपने समूह को बढ़ौतरी के लिए आनन्दित होने की शिक्षा दें।

आपके समूह के पुनः उत्पादन और गुणन होने के लिए रूपरेखा

समूह का आकार - छोटा समूह इतने लोगों की अनुमति देता है कि वह आमने-सामने वार्ता के संबंध को बना सकें। इस समूह की संख्या कभी भी इतनी बड़ी होनी चाहिए कि उसका कोई भी सदस्य अपनी बात समय के अभाव के कारण कहने से वंचित रह जाये। एक छोटा समूह कम-से-कम तीन लोगों और ज़्यादा-से-ज़्यादा बारह लोगों का होने पर ही प्रभावशाली हो सकता है। इसलिए यदि समूह बारह लोगों से बड़ा होगा तो उसके प्रभाव में कमी आयेगी। जब किसी छोटे समूह के अन्दर 8-12 लोग नियमित रूप से आना शुरु करें तो यह समय एक नये समूह को जन्म देने के लिए उचित समय है।

यदि हमारा समूह पुनः उत्पादन करना प्रारम्भ कर देता है तो परमेश्वर अनेकों लोगों को आशीषित कर सकता है, इस दर्शन को पकड़ें।

हमारा समूह अनेकों गुणा बढ़कर बहुत से जीवनों को आशीषित कर सकता है।

1 X 2 = 2 X 2 = 4 X 2 = 8 X 2 = 16 X 2 = 32 X 2 = 64 X 2 = 128 X 2 = 256 इत्यादि।

प्रत्येक समूह के लिए उनका लक्ष्य प्रति छः माह में नये समूह को जन्म देना हो।

जन्म देने की तैयारी- इससे पहले के असल में जन्म लेना प्रकट हो, एक अगुवा इस प्रक्रिया के लिए तैयारी करे।

1. जीवन समूह का एक कार्य अगुवे को खड़ा करना है। अगुवों ने, नव अगुवों का, नये समूहों की अगुवाई करने के लिए विकास तथा चुनाव करना चाहिए।

2. समूह के प्रारंभ से ही एक अगुवे ने अपने समूह के सदस्य को बाहर जाकर सुसमाचार प्रचार करने की महत्वता को समझाना आवश्यक है, जिससे उन्हें बढ़ौत्तरी तथा नये समूह को जन्म देने की ज़रूरत महसूस होगी। जैसे-जैसे नये समूह के जन्म का समय नज़दीक आए अगुवे ने अपने समूह को अवश्य ही सूचित कर देना चाहिए कि क्या होने वाला है। होने दें कि वह सदस्य नव अगुवों के लिए परमेश्वर से बुद्धि व दिशा मांगने के द्वारा इस प्रक्रिया में शामिल हो।

3. नये समूह को जन्म देने पर चर्चा करने के लिए एक समय को निर्धारित करें। इस दौरान निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दिया जाए।
   - कब और क्यों यह नया जन्म स्थान लेगा।
   - नया अगुवा कौन होगा (पासबान के द्वारा नियुक्त)
   - प्रतिफल अगुवे से कौन मिलेगा (होने दें कि प्रत्येक जन चुने)।
   - प्रत्येक समूह कहाँ एकत्रित होंगे।

   समूह के नए जन्म होने से पूर्व समूह के प्रत्येक सदस्य को यह जानकारियां होनी आवश्यक है।

विशेष बातें

1. इस बात का ध्यान रखें कि मनुष्य आदतों से बंधी हुई सृष्टि है और वह किसी भी परिवर्तन का विरोध करेंगे, विशेष कर तब जब पहले से उन्हें तैयार न किया गया हो।

2. प्रस्तावित अगुवे को अधिक-से-अधिक इस्तेमाल करना तथा समूह के सम्मुख उसे अधिकतर सामने लाना शुरु करें।

3. जैसे ही उस नए स्थान की नियुक्ति हो जाये उसके बारे में बड़े उत्साह के साथ लोगों से बातचीत करना प्रारम्भ करें। उत्साह एक फैलने वाली चीज़ है। लोग स्वयं ही उस अगुवे को चुनना पसन्द करेंगे जिसने उनकी ज़िन्दगी में सेवकाई निभाई हो। प्रार्थना करें कि परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार दोनों समूहों को एक साथ आगे बढ़ाएं।

4. एक अगुवा होने के नाते, उदारता के साथ लोगों को नये समूह में जाने दें।

''ऐसे हैं जो छितरा देते हैं तौ भी उनकी बढ़ती ही होती है और ऐसे भी हैं जो यथार्त से कम देते हैं और उससे उनकी घटती ही होती है।'' - नीतिवचन 11:24

5. नये समूह के जन्म लेने के कुछ समय पश्चात, यह रूपान्तरण या परिवर्तन करते समय छूट गये या नज़रअन्दाज़ हो गये लोगों से मिलने के लिए अगुवे से सम्पर्क करें।

अगुवे व नवअगुवे की कमी

यह सम्भव है कि कोई समूह बारह लोगों की संख्या तक बढ़ जाए और फिर भी उनमें कोई नवअगुवा न खड़ा हो सके, जो नये समूह का कार्यभार सम्भाल सके। यदि इस प्रकार की परिस्थिति आ जाती है, तो अगुवा अपने प्रशिक्षक से अवश्य मिले। हो सकता है कि अलग से एक क्षमताशील अगुवा इस नये समूह की अगुवाई करने के लिए नियुक्त किया जाए। इस प्रकार के वाकये की हम उम्मीद नहीं करते परन्तु ज़रूरत पढ़ने पर ऐसा किया जा सकता है।

प्रत्येक नया समूह किसी भी स्थान में एक नव अगुवे व मेज़बान के द्वारा प्रारम्भ हो।

नवअगुवे को चुनना

अगुवे के लक्षण

1. जितना उससे कहा जाये उससे ज़्यादा ही करता है।
2. वह किसी के कहे जाने का इन्तज़ार नहीं करता (खुद करता है)
3. वह सिद्धान्तों तथा तरीकों के बीच फरक को जानता है।
4. वह प्राथमिकताओं के अनुसार चलता है।
5. वह निम्न बातों को कहने में दृढ़ है-
   - क. मुझे पता नहीं
   - ख. मैं गलत था
   - ग. मुझे क्षमा करें
6. वह सदैव समूह के उत्थान की सोचता है।
7. वह एक कुशल वक्ता है।
8. वह ज़रूरत के अनुसार कार्य करता है।
9. वह सदैव उपलब्ध होता है।
10. वह दूसरों का निर्माण करता है।
11. वह खुद की जगह दूसरों को देने के लिए तैयार रहता है।
12. वह नये विचारों तथा तरीकों का स्वागत करता है।
13. वह इस बात को जानता है कि जहाँ वह खुद नहीं गया, वह वहाँ दूसरों को भी नहीं ले जा सकता है।

संक्षेप में, हमें ऐसे स्त्री व पुरुषों की आवश्यकता है जो गहराई से जीवन समूहों के प्रति समर्पित हों तथा उनके हृदय में लोगों के लिए बोझ हो। एक अगुवे ने मसीह के जीवन को नज़दीक से पढ़ना चाहिए तथा उसे यीशु के कार्यों की अच्छी जानकारी होनी चाहिए। जिस प्रकार से यीशु मसीह ने लोगों को प्रभावित किया ठीक उसी प्रकार से मसीही लोगों ने चर्च तथा समाज में पाये जाने वाले लोगों को आकर्षित करना चाहिए।

जीतना - मेरे संसार के लिए एक दर्शन

इस समय की यह खास ज़रूरत है कि मसीही लोग उस दर्शन को पकड़ सकें जो मसीह की उन आज्ञाओं में छुपी हैं जो उसने अपने शिष्यों को दी थी, ***''संसार की सारी जाति के लोगों तक जाओ और सुसमाचार सुनाओ।''*** - मरकुस 16:15

परमेश्वर की ओर से यह आज्ञा वास्तव में चेलों के लिए एक चुनौति थी जिसे वे अपने सामर्थ्य से पूरा नहीं कर सकते थे। परन्तु पवित्र आत्मा स्त्री व पुरुषों के द्वारा इस कार्य को करने के योग्य था, जिससे नये विश्वासियों के अन्दर एक जंजीर के रूप में ऐसा कार्य हुआ कि प्रथम

शताब्दी के सम्पूर्ण संसार ने मसीह के सुसमाचार को सुन लिया। सुसमाचार ने लोगों के हृदय को इस कदर भेद दिया कि एक पागानी रोमन सम्राट भी ***''पूरी तरह बदल गया।''***

प्रभु यीशु मसीह और उसके वचनों की सामर्थ्य में आज भी कोई कमी नहीं आयी है; फिर भी वर्तमान मसीहियों का प्रभाव उन मसीहियों के समान नहीं है जैसा प्रथम शताब्दी में था। जिसके परिणामस्वरूप संसार में रहने वाले आधे से ज़्यादा लोगों ने अभी भी परमेश्वर के वचन को नहीं सुना है।

हमारे परमेश्वर ने कभी संसार से यह नहीं कहा कि वह मसीहियों के पास आएं। वरन्, उसने मसीहियों से संसार में जाने तथा सुसमाचार सुनाने के लिए कहा, ***''जो उद्धार के निमित्त परमेश्वर की एकमात्र सामर्थ है।''*** इस सत्र में हमारा लक्ष्य आपके समूह की दूसरों को मसीह में प्रभावित करने की क्षमता के सन्दर्भ में, सहायता तथा उन्हें उत्साहित करना है।

आज अधिकतर मसीही लोग व्यक्तिगत पराजय के जीवन को जीते हैं जिसके परिणामस्वरूप दूसरों के बीच उनकी गवाही प्रभावित होती है। आधुनिक समाज के अन्दर ज्यादातर नकारात्मक बातों की ओर ध्यान दिया जाता है, परन्तु शायद ही मसीहियों को यह अन्दाज़ा हो कि किस प्रकार से परमेश्वर उन्हें सकारात्मक रूप में इस्तेमाल कर सकता है। पौलुस ने खुद को इतना अपर्याप्त महसूस किया कि वह अपनी दशा का बखान करता है, ***''मैं निर्बलता और भय के साथ बहुत थरथराता हुआ तुम्हारे साथ रहा।''*** बहुत से मसीही लोग इस शंका से घिरे हैं कि वह गैर मसीहियों पर कोई प्रभाव नहीं डाल सकते। आज पौलुस के जीवन को देखने की ज़रूरत है जिसने कभी अपनी हीन भावना से हार नहीं मानी। उसकी सेवकाई सामर्थपूर्ण थी। ***''जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को चेतावनी देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें। इसी के लिए मैं उसकी उस शक्ति के अनुसार जो मुझ सामर्थ्य के साथ प्रभाव डालती है तन मन लगाकर परिश्रम भी करता हूँ।''*** कुलुस्सियों 1:28-29 आप भी परमेश्वर के द्वारा इस्तेमाल किये जा सकते हो इसलिए नहीं कि आप हिम्मतवाले या बुद्धिमान हो परन्तु इसलिए कि परमेश्वर आपमें कार्य करता है।

जीतना-मेरे संसार तक पहुँचने के लिए व्यवहारिक रणनीतियाँ

ऐसा प्रतीत होता है जैसे अनेकों मसीह प्रचार करने के नाम से घबराते हैं। क्यों? बहुत से विश्वासियों ने कभी अपने विश्वास को किसी के साथ भी नहीं बाँटा। क्यों नहीं? क्या यह इसलिए है कि गैर मसीही लोग नकारात्मक या सुसमाचार का विरोध करने वाले हैं? नहीं? अधिकतर लोगों से जब यह पूछा जाता है कि यदि उन्हें कलीसिया में आने के लिए किसी मित्र से निमन्त्रण मिले तो ''उनका उत्तर होता है हाँ हम जाएंगे।'' ज़्यादातर लोगों में जब सुसमाचार बाँटा जाता है तो वह सुसमाचार के प्रति खुले होते हैं। हालाँकि सारे लोग मसीह

को ग्रहण करने को तैयार नहीं होते, परन्तु वह मसीह के बारे में बात करना तथा उसे समझना चाहते हैं।

संसार बदल रहा है। संसार खतरे में है – और कुछ भी अर्थपूर्ण नज़र नहीं आता। परन्तु सुसमाचार अर्थपूर्ण है। यह आशाहीन संसार में आशा प्रदान करता है। बहुत से लोग सुनना चाहते हैं। हमें केवल ऐसे तरीकों को चुनना होगा जो स्पष्ट हों और व्यवहारिक हों।

इसके अनेकों तरीके हैं। अनेकों तरीके दूसरे की तुलना में आपके लिए अधिक प्रभावशाली होंगे।

आपको अधिक रचनात्मक बनाने में उत्साहित करने के लिए कुछ सुझाव दिये गये हैं:

1. **लोगों को कलीसिया में आमन्द्रित करें।**
   अपने मित्रों को चर्च में आमन्त्रित करने तथा उन्हें कलीसिया या छोटे समूह में आने हेतु तैयार करने को अपनी आदत बना लें।

2. **कुरेदने वाले प्रश्न** (सामर्थी वक्तव्य में अध्याय 6 में उदाहरण देखें)
   यह करने में सहज और प्रभावशाली है, कुछ समय पहले एक व्यक्ति तथा उसके भागीदार ने एक घण्टे में 12 घरों में फोन किया। उन्होंने 8 लोगों से बातचीत की, 5 लोगों के साथ सुसमाचार प्रचार किया और उनमें से तीन लोगों ने मसीह को ग्रहण करने के लिए प्रार्थना की।
   लोग बहुत खुले होते हैं यहाँ तक कि किसी अनज़ान से भी बातें करके द्वार पर ही मसीह को ग्रहण कर सकते हैं।

3. **व्यक्तिगत साक्षी**
   जब भी कभी आपको अवसर मिलता है संक्षेप में अपनी गवाही बाटें।
   जो कार्य परमेश्वर ने आपके लिए किये हैं उन्हें लोगों को सुनने की ज़रूरत है। हर एक मसीही के पास अपनी गवाही बाँटने का एक सरल तरीका होना चाहिए। अपने दोस्त की, उसकी साक्षी तैयार करने में सहायता करें। सामर्थी शिष्यता के आठवें सत्र के एक से एक को कार्यशाला का, सामर्थी वक्तव्य अध्याय एक या अगुवे जो अगुवाई करते हैं पाँच का इस्तेमाल करें।

4. **सुसमाचार की पुस्तिकाएं**
   अपने साथ हमेशा ''परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से जानना'' या चार आत्मिक सिद्धान्त या पवित्र आत्मा से सम्बन्धित कोई आत्मिक लघु पुस्तिका अपनी जेब में या बटुबे में सदैव रखें जिससे आप सदैव तैयार हों।

5. **फिल्म या विडिओ**
   ● यीशु फिल्म ● विवाह ● युवा व अभिभावक ● दवाइयों का शोषण इत्यादि।

   आप अपने मित्र के पास फिल्म को छोड़कर बाद में उनके विचार पूछने के लिए या किसी शाम में फिल्म देखने के लिए आने को कह सकते हैं। खास उपलक्ष जैसे क्रिसमस या ईस्टर इस कार्य के लिए उचित समय हैं।
   उदाहरण के लिए आप जीज़स फिल्म को अपने समूह के किसी व्यक्ति को देखने के लिए देना चाहेंगे। प्रत्येक व्यक्ति या दंम्पत्ती अपनी इच्छा के अनुसार बारी बारी करके इस विडियो का इस्तेमाल करके अपने मित्रों को या अपने पड़ोसियों को फिल्म देखने के लिए आमन्त्रित कर सकते हैं। समूह के बाकी लोग उस दम्पती व आमन्त्रित लोगों के लिए प्रार्थना कर सकते हैं।
   फिल्म को दिखाने के पश्चात उन लोगों से निम्नलिखित प्रश्न पूछे जा सकते हैं:
   - आप इस फिल्म के बारे में क्या सोचते हैं ?
   - क्या इस संदेश से आपको कुछ समझ में आया ?
   - जिस प्रकार से इस फिल्म में बताया गया क्या आपने कभी यीशु मसीह को अपने जीवन में आमन्त्रित किया ? यदि नहीं तो पूछे।
   - क्या आप उसे अपने हृदय में आमन्त्रित करना पसन्द नहीं करेंगे ?

6. **दोस्ताना पार्टियां**
   किस प्रकार से एक दोस्ताना पार्टी का आयोजन करना है जानने व निर्देश प्राप्त करने के लिए अगुवे जो अगुवाई करते हैं सत्र पाँच पर ध्यान दें। आपके छोटे समूह तथा मित्रों के बीच में इस्तेमाल करने के लिए यह सर्वोत्तम रणनीति है।

7. **एक से एक को प्रचार – सामर्थी वक्तव्य**
   एक से एक प्रणाली का पुन: उत्पादन करने के स्वभाव के परिणामस्वरूप अनेकों लोगों तक सुसमाचार पहुँचेगा। प्रारम्भ में हमें धीरज की आवश्यकता पड़ेगी क्योंकि यह एक छोटे समूह से प्रारम्भ होता है। जब आप ऐसे लोगों को शिक्षा देते हैं जो दूसरों को शिक्षा दे सके तब गिनती और बढ़ेगी। जैसे ही आप एक जन को शिक्षा देना समाप्त करते हैं निश्चय जानें कि दूसरे को शिक्षा देना प्रारम्भ कर दें। अपने पासबान या दौरे के संचालक से सदस्यों के पते प्राप्त करें। आपकी कलीसिया की प्रत्येक सेवकाईयां मेहमानों/संपर्क में आये लोगों की रिपोर्ट ज़रूर दें, जिससे वे अभी मिले हैं। अपनी सेवकाई व प्रभाव के क्षेत्र में आने वाले लोगों की सूचि की गिनती को बढ़ाते जाएं। प्रत्येक जन के लिए लगातार प्रार्थना करें तथा हर व्यक्ति को सुसमाचार सुनाने के लिए खोजी बनें।

8. **मसीह को जीवन शैली के रूप में बाँटना**
   किसी को भी कहीं भी मसीह के बारे में बताने के लिए तैयार रहें। सहायता के लिए अगले पृष्ठ को देखें।

जीतना-जीवन शैली से कैसे साक्षी दें

अ. परमेश्वर व लोगों के लिए उपलब्ध रहें:

2 तिमुथियुस 4:20 को पढ़ें। इस पद से आप क्या समझते हैं?

परमेश्वर आपकी योग्यताओं से बढ़कर आपके उपलब्ध होने में रुचि रखता है। जब आप उसके लिए उपलब्ध होते हैं तो वह आपके द्वारा लोगों को मसीह के पास ले आयेगा।

आ. परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको साक्षी देने के अवसर प्रदान करें:

1. विशेष बात करें। ईश्वरीय मिलन कराने के लिए प्रार्थना करें। प्रार्थना करें कि परमेश्वर किसी व्यक्ति तक आपकी अगुवाई करें।
2. यह मानें कि यदि आप किसी व्यक्ति के साथ कुछ देर तक बातें करने के लिए हैं तो यह आपकी प्रार्थनाओं का जवाब है।
3. साक्षी देने के अवसर को सौभाग्य समझे कोई ज़िम्मेदारी नहीं।

इ. जहाँ लोग रहते हैं वहाँ ही उनसे मिलें:

बहुत से मसीही लोग उनका अधिकतर समय दूसरे विश्वासियों के साथ में एक मसीही गतिविधि से दूसरी में जाने में अपना समय खर्च कर देते हैं, ... और इसलिए गैर मसीहियों से मिलने का थोड़ा सा समय भी नहीं निकाल पाते।

गैर मसीहियों में मसीह का कलाम सुनाने के लिए आपको वहाँ जाना है जहाँ लोग रहते हैं। सतर्क रहें तथा जैसे ही परमेश्वर आपको अवसर देता है गवाही बाटें।

ई. परमेश्वर से प्रार्थना करें कि जिससे भी आप मिलते हैं उसके प्रति वह आपके मन में प्रेम व रुचि डाल दे:

1. दोस्त की तरह बनें।

2. प्रश्न पूछने के द्वारा बात को प्रारम्भ करें। प्रश्न जैसे कहाँ, कौन, कैसे, क्या, कब और क्यों किसी भी बात को आगे बढ़ाने में सहायता प्रदान करते हैं।
   क. यूहन्ना 4:7 पढ़ें। यीशु ने उस स्त्री से कूँए पर क्या प्रश्न पूछा?

   ____

उसने उससे यह प्रश्न क्यों पूछा?

____

ख. प्रेरितों के काम 8:30 पढ़ें। फिलिप्पुस ने क्या प्रश्न पूछा?

____

उसने यह प्रश्न क्यों पूछा? ______________________________

3. कुछ सुझावित प्रश्न:
   क. एक पड़ोसी:
   नमस्कार मेरा नाम ______________ है। मैं आपसे मिलने का एक मौका चाहता हूँ। आप यहाँ पर कितने समय से रह रहे हैं?
   ख. एक संगी यात्री
   नमस्ते मेरा नाम ______________ है। आप कहाँ जा रहे हैं?
   ग. अन्य
   क्या आप इस शहर में रहते हैं?
   आप क्या काम करते हैं?
   क्या मैं आपकी सहायता कर सकता हूँ?
   क्या आप मेरी ______________ में सहायता कर सकते हैं।

3. मसीह के बारे में बात करें:

प्रेरितों 8:4 को पढ़ें। यह विश्वासियों के बारे में क्या कहता है? ______________

प्रथम शताब्दी के दौरान मसीहियों ने अपनी रोज़मर्रा की जिन्दगी में वह जहाँ भी गये उन्होंने प्रतिदिन मसीह के सुसमाचार को प्रचार किया। आज हमें लोगों से मिलने तथा उन्हें मसीह का वचन सुनाने के लिए प्राप्त अवसरों के प्रति अपनी आंखों को खोलने की आवश्यकता है। आप एक अलग और अनोखे व्यक्ति हैं जिनका एक खास क्षेत्र में लोगों पर प्रभाव है और कोई भी उसकी नकल नहीं कर सकता। किसी भी व्यक्ति से प्रश्न पूछने के द्वारा, अपने जीवन के अनुभव बताने के द्वारा जान पहचान बढ़ाएं और इसी तरह बातों ही बातों में आपको ऐसा अवसर प्राप्त होगा जिससे आप सुसमाचार प्रचार कर सकें।

विषय परिवर्तन प्रणाली का इस्तेमाल करते हुए, चार आत्मिक सिद्धान्त या क्या आप परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से जानना चाहेंगे? पुस्तकों के माध्यम से, सुसमाचार सुनाने के स्थान तक पहुँचे।

1. मैं एक छोटी पुस्तक को पढ़ रहा था जिसने मेरे जीवन में बड़ा काम किया क्या मैं उसे आपके साथ बाँट सकता हूँ?
2. मेरे पास एक ऐसी पुस्तक है जो एक सच्चा मसीह होने का अर्थ बताती है, क्या मैं उसको आपके साथ बाँट सकता हूँ?

3. एक छोटी सी गवाही देते हुए कहें, ''आइये मैं आपको बताऊं कि मसीह का अनुसरण करने में क्या बातें शामिल होती हैं।''
4. क्या कभी आप आत्मिक बातों के बारे में सोचते हैं? या क्या आप आत्मिक बातों में रुचि रखते हो?
5. ''क्या मैं आपको बता सकता हूँ कि किस प्रकार यीशु मसीह हमारे रोज़मर्रा के जीवन से सम्बन्ध रखता है? क्या आपके पास कुछ क्षण का समय है?''
6. क्या आप अपने जीवन में कभी उस मुकाम पर आये, जहाँ आपको लगा कि आप परमेश्वर के हो, और अगर आप आज मर जाओ तो आप स्वर्ग में ही जाओगे? यदि उत्तर हाँ हो तो कहें, ''मान लीजिए कि आज आपका देहान्त हो जाता है और आप उसके सम्मुख खड़े होते हैं और वह आपसे पूछता है कि, आखिर मैं तुम्हें अपने स्वर्ग में क्यों आने दूँ? तो आप उसे क्या जवाब दोगे?'' यदि वह अनिश्चित है तो कहें, ''क्या मैं आपको बताऊँ कि आप किस तरह सुनिश्चित हो सकते हो?''

ऐसी रणनीति को चुनें जो आपके लिए तथा उन विभिन्न लोगों के लिए जिन्हें परमेश्वर का प्रेम बाँटने का आपको अवसर मिलता है, कारगर व उचित साबित हो।

याद रखें:

- परमेश्वर व लोगों के लिए उपलब्ध हो।
- परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको साक्षी देने के अवसर प्रदान करे।
- जहाँ लोग रहते हैं वहाँ ही उनसे मिलें।
- परमेश्वर से प्रार्थना करें कि जिससे भी आप मिलते हैं उसके प्रति वह आपके मन में प्रेम व रुचि डाल दे।
- मसीह के बारे में बातें करें।

जब आप परमेश्वर के सुसमाचार को सुनाते तथा दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रशिक्षित करते हैं तो परमेश्वर आपको आशीष दे।

अगुवाई को सीखना

सत्र छः

कार्य (सेवा)

प्रत्येक बिन्दु पर अपने अगुवे से विचार-विमर्श के उपरान्त निशान (✓) लगायें।

अपने अगुवे से मिलने से पूर्व तैयारी:

❑ 1. **एक सुरक्षित वातावरण बनाना** को पढ़ें व अध्ययन करें। अपने समूह के साथ यह बाँटने के लिए तैयार रहें कि दूसरों के प्रति समर्पित होने का क्या मतलब होता है।

❑ 2. अपने **समूह की ताकत को पहचानने में कैसे मदद करें** को पढ़ें व अध्ययन करें। अपने अगुवे के पास एक योजना के साथ तैयार होकर आयें कि किस प्रकार आप अपने समूह की ताकत व वरदान को पहचान सकते हैं।

❑ 3. कार्य (सेवा) को पढ़ें। यह हमारे समूह का पाँचवां कार्य है।

❑ 4. स्वयं अपनी आत्म आत्मिक वरदानों की खोज करें तथा जो आपको प्राप्त होता है उसको अपने अगुवे के साथ बाँटें।

अपने अगुवे के साथ पूरा करना

❑ 5. अपनी व्यक्तिगत प्रार्थना तथा स्तुति को बताएं।

❑ 6. बिन्दु 1 से 4 पर चर्चा करके (✓) निशान लगाएं।

इस माह अपने समूह से चर्चा करने की योजना बनाएं

❑ 7. नये समूह को जन्म देने की योजना को अन्तिम स्वरूप दें। होने दें कि लोग स्वयं चुनें कि वह किस समूह के सदस्य बनना पसन्द करेंगे। आपको नये लोगों को आमन्त्रित करने के द्वारा जो अवसर व उत्तेजना प्राप्त हो रही है उसे समूह के साथ बाँटें।

❑ 8. बाहर जाकर सुसमाचार प्रचार करने के परिणाम की खुशी को समूह के साथ बाँटें।

- ❑ 9. व्यक्ति तथा समूह की ज़रूरतों के लिए प्रार्थना करें।
- ❑ 10. ''अगुवाई करना सीख रहे हैं'' के अगले सत्र हेतू दिनाँक ________ समय ________ स्थान ________ को निर्धारित करें।
- ❑ 11. अगले सामर्थी वक्तव्य प्रशिक्षण के लिए दिनाँक ________ समय ________ स्थान ________ को निर्धारित करें।
- ❑ 12. विस्फोटक वृद्धि शिष्यनिर्माणकारी प्रक्रिया सत्र में शामिल हों। दिनाँक ________ समय ________ स्थान ________
- ❑ 13. अगुवे के रूप में अपने प्रमाण पत्र को प्राप्त करें।
- ❑ 14. अपना खुद का समूह प्रारम्भ करें। दिनाँक ________
- ❑ 15. अपने प्रशिक्षक से मिलने की ________ योजना बनाएं।

एक सुरक्षित वातावरण का निर्माण करना

सत्र चार के दौरान हमने सीखा कि रिश्ते, ईमानदारी से तथा ईमानदारी, प्रेम तथा भरोसे के परिणामस्वरूप प्राप्त होती है। एक दूसरे या परमेश्वर के लिए प्रेम तथा भरोसा तब उत्पन्न होता है जब हम एक दूसरे को वास्तव में नज़दीकी से जानने लगते हैं। हमारे जीवन समूह का वातावरण इतना सुरक्षित होना चाहए, कि हमें अपने जीवन की हकीकत छुपाने या वह दिखावा करने व बनने की ज़रूरत न पड़े जो असल में हम हैं। नहीं। अगर अगुवा चाहता है कि समूह पारदर्शी तथा ईमानदार बनें तो उसे खुद पारदर्शी होना ज़रूरी है। अगुवा समूह की व अपने आपकी, परमेश्वर को तथा दूसरों को, जानने में सहायता कर सकता है। हम एक दूसरे की सामर्थ्य के प्रति अधीन होने तथा एक दूसरों की कमज़ोरी में उसे बचाने के द्वारा एक सुरक्षित वातावरण का निर्माण कर सकते हैं।

परमेश्वर व एक दूसरे के प्रति समर्पण

समर्पण / अधीनता शब्द बहुत से लोगों के जीवन में ऐसे भय को उत्पन्न करता है जैसे कैंसर या मृत्यु। इसका कारण यह है क्योंकि, समर्पण का अर्थ मृत्यु - मेरी इच्छाओं की मृत्यु, मेरे तरीकों की मृत्यु, मेरे आराम या हर एक उस बात की मृत्यु है जो मुझे अच्छी लगती है।

जब हम मृत्यु की ओर देखते हैं तो वह हमें अत्यन्त नकारात्मक और नज़रअन्दाज करने जैसे चीज़ नज़र आती है। परन्तु परमेश्वर उसे वैसे नहीं देखता है। उसके लिए मृत्यु एक ऐसा मार्ग है जिसको पार करके ही हम जीवन-उसके जीवन में प्रवेश कर सकते हैं।

यह लगातार बाइबल का मुख्य विषय बना रहा है। निम्न बातों पर ध्यान दें-

''क्योंकि हम सर्वदा जीते जी यीशु के कारण मृत्यु के हाथ में सौंपे जाते हैं कि यीशु का जीवन भी हमारे मरनहार शरीरों में प्रगट हो।'' -2 कुरिन्थियों 4:11

''मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है तो बहुत फल लाता है।'' - यूहन्ना 12:24

यदि हम ***''लेकिन मसीह''*** का अपने जीवन में अनुभव करना चाहते हैं तो उससे पहले ***''मैं नहीं''*** का अनुभव करना होगा। यही परमेश्वर का तरीका है।

अधीनता कोई मजबूरी नहीं है। अधीनता या समर्पण हृदय से होता है। मसीह की देह होने के नाते जो आपको दिया गया है उसके द्वारा दूसरों की अधीनता करने हेतू परमेश्वर पर भरोसा करें जो दूसरों में कार्य करता है।

हमें हमारी सामर्थ की उद्घोषणा करना सीखना है। हमारी सामर्थ की उद्घोषणा करने के लिए हमें उन्हें पहचानना होगा तथा हमारे समूह में दूसरों के सामर्थी क्षेत्रों में खुद को अधीन व नम्र करना होगा। ऐसा करने से दूसरे व्यक्ति को अपनी सामर्थ इस्तेमाल करने की अनुमति प्राप्त होती है, जो दूसरों को प्रभावित करती है तथा जिससे मसीह की देह का फायदा होता है।

अपने समूह की अपने सामर्थी क्षेत्र को पहचानने में कैसे सहायता करें।

1. अपने आत्मिक वरदान को जानने के लिए ''**आत्मिक वरदान की खोज**'' नामक कार्य पृष्ठ का अध्ययन करें।

2. समूह के प्रत्येक जन के लिए ''**आत्मिक वरदान की खोज**'' की पर्याप्त मात्रा में नकल (प्रतियाँ) करवा लें। उन्हें समझा दें कि इसके द्वारा किस प्रकार से कार्य करना है। वह इस अध्ययन को स्वयं भी कर सकते हैं।

3. समूह से आप उनकी सहायता करें, समझायें तथा प्रोत्साहित करें कि किस प्रकार से परमेश्वर ने उन्हें मसीह की देह की सेवा के लिए वरदानों से भरा है।

4. समूह के प्रत्येक सदस्य की दूसरों के वरदानों की पुष्टि करने में सहायता करें।

अपनी ताकत को पहचानना

- प्रत्येक जन को एक खाली पेपर दें।

- अपने समूह में से एक व्यक्ति को चुनें। समूह के बाकी लोग अपने विचार बताएं कि उनके विचार से उस व्यक्ति की ताकत क्या है, उदाहरण–दोस्ताना, देखभाल करने वाला, बाहर जाने वाला, बुद्धिमान इत्यादि।

- अगुवा पूछे: इस व्यक्ति के आत्मिक वरदान कौन से हैं ?

- जिस व्यक्ति की जाँच की जा रही थी, वह उनके बारे में कहे जा रहे गुणों तथा आत्मिक वरदानों को मद्देनज़र रखते हुए लिखें और बतायें कि वह उनसे सहमत हैं या नहीं।

- जैसे समूह दर्शाता है कि आप उनकी प्रत्येक बात से सहमत हैं या नहीं। तब इस बात पर चर्चा करें कि आप समूह के उस व्यक्ति के गुणों व आत्मिक वरदानों के प्रति आधीन हो रहे हैं।

- इस प्रक्रिया को समय का ध्यान रखते हुए या अलग–अलग हफ्तों में प्रत्येक सदस्य के साथ करें।

एक दूसरे के गुणों के प्रति समर्पित व अधीन होने के द्वारा हम एक दूसरे को पूर्ण बनाते हैं। जैसे– हो सकता है कि मैं किसी क्षेत्र में कमज़ोर हूँ जिसमें आप शायद मज़बूत हों परन्तु बहुत से क्षेत्र ऐसे भी होंगे जिनमें आप कमज़ोर होंगे और मैं बहुत मज़बूत / एक साथ मिलकर कार्य करने से हम सभी क्षेत्रों में एक समूह के रूप में मज़बूत होंगे।

कार्य (सेवा)

ऐसे अगुवे का निर्माण करना जो दूसरों को शिक्षा व प्रशिक्षण देगा

सेवा करना व भलाई हमारे मसीही प्रेम व आत्मिक वरदानों से भरे होने का महत्वपूर्ण प्रगटीकरण है। समूह के सदस्य अनेकों तरीकों से सेवा निभा सकते हैं। यीशु ने कुछ लोगों को झुण्ड की अगुवाई करने के लिए चुना और उसने अपना अधिकतर समय उनका विकास करने में खर्च किया। आज हमें भी चेलों का निर्माण करने की आवश्यकता है क्योंकि इनके बिना हम मसीह की सेवा को कभी पूरा नहीं कर पाएंगे।

> ***''और जो बातें तूने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे, जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।''*** – 2 तिमुथियुस 2:2

> ***''उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यद्वक्ता, कुछ को सुसमाचार सुनाने वाला, कुछ को रखवाले और कुछ को उपदेशक नियुक्त करके दे दिया, जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं, और सेवा का काम किया जाए और मसीह की देह उन्नति पाये, जब तक कि हम सबके सब विश्वास और परमेश्वर के पुत्र की पहचान में एक न हो जाएं और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाएं।''*** – इफिसियों 4:11–13

> ***''यह बात सत्य है कि जो अध्यक्ष होना चाहता है, वह भले काम की इच्छा करता है।''*** – 1 तिमुथियुस 3:1

> ***''परन्तु जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने; और जो तुममें प्रधान होना चाहे वह तुम्हारा दास बने, जैसे कि मनुष्य का पुत्र, वह इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाये, परन्तु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करें, और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपने प्राण दें।''*** – मत्ती 20:26–28

कार्य (सेवा) शिष्यता (एक से एक को-प्रत्येक सप्ताह एक सत्र को पूरा करें):
(नवअगुवे या सह-संचालक)

- इस प्रशिक्षण के दौरान शिक्षक व शिष्य किसी भी उपयुक्त स्थान व समय में, सामर्थी आधार, सामर्थी शिष्यता या सामर्थी वक्तव्य में एक किसी न किसी को पूर्ण अध्ययन करने के लिए जमा होते हैं। (अधिक विवरण के लिए अगुवों की निर्देशिका को देखें।

- अपने आत्मिक वरदानों को समझना तथा उन्हें लागू करना।

- जैसे आप अपने जीवन समूह को प्रारम्भ करते हैं, उस समय खुद के तथा अपने नवअगुवों के लिए सत्रों की अगुवाई करना सीखें।

- अगुवा जो अगुवाई करता है सत्र आपके लिए एक समूह अगुवे के रूप में, आपके प्रशिक्षक की देखरेख में, आपको नियमित तौर पर बढ़ौतरी प्रदान करता है।

आत्मिक वरदानों की खोज

एक अवलोकनः जो परमेश्वर द्वारा आपको दिये गये वरदानों की पहचान करता तथा उनका विकास करता है।

आत्मिक वरदानों की खोज का इस्तेमाल कैसे करें

1. प्रत्येक प्रश्न को स्वयं पढ़ें तथा 0-4 के अर्न्तगत मूल्याँकन वाक्यों के आधार पर उचित बात को चुनें, जो आपके जीवन में ठीक है। अंक तालिका में अंकित प्रश्न संख्या के सामने उसे लिख दें।

2. जब आप सारे प्रश्नों का उत्तर दे चुकें तो प्रत्येक पंक्ति का योग करें जैसे पंक्ति अ. ब. स. इत्यादि।

3. उच्च अंकों पर चक्र बना दें। वरदान को पता करने के लिए अंक तालिका को पलटें तथा उच्चतम अंक से सम्बन्धित वरदान को लिखें। इससे आपका वरदान मिश्रित दशा में दिखेगा। आप एक अनोखे जन हैं। परमेश्वर ने आपको रचा है तथा दूसरों की सेवा के लिए एक खास वरदान दिया है।

4. वरदानों की परिभाषा को पढ़ें और उससे संगत वचन को देखें। यह आपको अपने वरदान को समझने तथा उसे सराहने में सहायता करेगी।

5. यह केवल वरदान को खोजने की प्रक्रिया का एक हिस्सा है। और भी दूसरे तरीकों का अध्ययन करें जिसके द्वारा आप परमेश्वर द्वारा दिये गये वरदानों को पहचान सकें। जब हम दूसरों के वरदानों और सामर्थी क्षेत्रों के प्रति अधीन बनेंगे और हमारे जीवन के वरदानों व सामर्थी क्षेत्रों द्वारा दूसरों की सेवा करेंगे तब हमारा जीवन समूह हमारे वरदानों को पहचानने तथा उनका अभ्यास करने का सबसे उत्तम स्थान होगा।

आत्मिक वरदान खोजने हेतु प्रश्न

1. मैं पर्दे के पीछे, छोटे-छोटे कार्यों की देखभाल करना पसन्द करता हूँ।
2. जब किसी समूह में कोई आगे नहीं बढ़ता तब मैं आगे आकर नेतृत्व सम्भालता हूँ।
3. मैं बढ़े आनन्द के साथ ज़रूरतमन्द लोगों के लिए भोजन व रहने के स्थान का इन्तज़ाम करता हूँ।
4. चाहे कितना भी मुश्किल कार्य क्यों न हो, मुझमें कार्य को करवाने तथा किसी की योग्यता को पहचानने की क्षमता है।
5. किसी खास मकसद या योजना को पूरा करने हेतु मुझमें, लोगों व उनके विचारों को व्यवस्थित करने की योग्यता है।
6. लोग ज़्यादातर कहते हैं कि मुझमें आत्मिक परख की आत्मा है।
7. परमेश्वर की महिमा के लिए बड़े-बड़े कामों को करने हेतु मुझे पूर्ण भरोसा है।
8. मुझसे कलीसिया के कार्यक्रमों में गाने, या वाद्य बजाने के लिए कहा जाता है।
9. परमेश्वर ने मुझे अनज़ान भाषा में संदेश पहुँचाने के लिए इस्तेमाल किया है।
10. मेरी प्रार्थनाओं के द्वारा परमेश्वर ने असम्भव को भी सम्भव कर दिया।
11. मेरे अन्दर चित्रकारी की व निर्माण करने की एक रचनात्मक योग्यता है।
12. मैंने यीशु की सामर्थ में होकर बीमारियों को चंगा किया है।
13. जो लोग भयंकर आर्थिक समस्या में होते हैं, मैं उन्हें आर्थिक सहायता करना पसन्द करता हूँ।
14. मैं लोगों की अस्पताल में, जेल में तथा अनाथालयों में जाकर सेवा करना पसन्द करता हूँ।
15. मेरे पास ऐसा अन्तः ज्ञान पाया जाता है जो कठिन परिस्थितियों में व्यवहारिक समाधान प्रदान करता है।
16. जब दूसरों को वह मुद्दा या समस्या कलीसिया में समझ नहीं आती तो मैं उसे समझ कर उसका समाधान कर सकता हूँ।
17. जो लोग निराश होते हैं, मैं उन्हें उत्साहित करना तथा सलाह देना पसन्द करता हूँ।
18. मुझमें वचन के अनुच्छेद का गहन अध्ययन करने तथा उसे लोगों में बाँटने की खास योग्यता है।

19. वर्तमान में मुझ पर एक व्यक्ति या बहुत से जवान मसीहियों की आत्मिक बढ़ौत्तरी की ज़िम्मेदारी है।

20. आत्मिक मामलों में लोग एक अधिकारी के रूप में मेरा आदर करते हैं।

21. मुझमें विदेशी भाषा सीखने की योग्यता है।

22. मुझमें भाषण या प्रवचन सुनाने की विशेष योग्यता है और लोग मुझे सुनना पसन्द करते हैं।

23. मैं गैर मसीहियों में समय बिताना पसन्द करता हूँ खास तौर पर इस आशा से कि वह यीशु के बारे में सुनेंगे।

24. मैं लम्बे समय तक प्रार्थना करना पसन्द करता हूँ।

25. मैं पासबान या अगुवों की सहायता करना पसन्द करूँगा ताकि वे अपनी सेवकाई की प्राथमिकताओं को पूरा कर सकें।

26. मैं अधिकतर समूह में अगुवा करके चुना जाता हूँ।

27. जब मेहमान लोग आते हैं तो मैं उनका आदर करता हूँ तथा उन्हें ''अपना घर'' जैसा महसूस करने में मदद करता हूँ।

28. चाहे लक्ष्य कितना भी साधारण हो, मुझे दूसरों की सेवा करने में आनन्द आता है।

29. मैं अत्यधिक व्यवस्थित व्यक्ति हूँ जो लक्ष्य साधता तथा उसे पूरा करने के लिए योजना बनाता है।

30. मैं चरित्र की पहचान करने में निपुण हूँ तथा किसी भी आत्मिक गलती को पहचान सकता हूँ।

31. मैं विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर किसी भी कलीसिया को 10,000 लोगों तक बढ़ा सकता है।

32. मैं विश्वास करता हूँ कि मैं अराधना के दल में गा सकता हूँ।

33. मैं अपनी व्यक्तिगत प्रार्थना में अन्यान्य भाषा में प्रार्थना करने को महत्व देता हूँ।

34. परमेश्वर मेरे द्वारा ऐसे अद्‌भुत कार्य किये हैं जो मनुष्य की सामर्थ से बाहर हैं।

35. मुझे लकड़ी का कार्य, बुनाई का काम, सिलाई, दिमागी काम, शीशे के काम करना पसन्द है।

36. मैंने देखा है कि लोग मेरी प्रार्थना से चंगे होते हैं।

37. मैं दशमाँस से बढ़कर अपनी कलीसिया में भेट देता हूँ।

38. जो लोग चोट खाये हुए तथा अकेलापन महसूस करते हैं, मैं उन लोगों के साथ कीमती समय व्यतीत करता तथा उन्हें प्रोत्साहित करने का प्रयास करता हूँ।

39. जटिल परिस्थितियों में जब किसी को कुछ समझ नहीं आता उस समय पर महत्वपूर्ण निर्णयों को लेने के लिए परमेश्वर ने मुझे खास योग्यता दी है।

40. मुझे परमेश्वर के वचन से कठिन प्रश्नों को ढूँढ़ना अच्छा लगता है और मैं दूसरों की तुलना में आसानी से और जल्दी उनका जवाब ढूँढ़ लेता हूँ।

41. लोग अधिकतर मुझे अपनी समस्याएं बताते हैं और मैं उन्हें उत्साहित करता हूँ।

42. जब बाइबल से कोई मुश्किल प्रश्न उठता है तो मैं उसका जवाब ढूँढ़ने हेतु प्रेरणा पाता हूँ।

43. मैं मसीहियों को सांसारिक प्रभावों से बचाने के लिए काम करता हूँ जो उनकी आत्मिक बढ़ौत्तरी में बाधा डालकर उनके विश्वास को कमज़ोर बना सकती हैं।

44. मैं नये चर्च को प्रारम्भ करने में हार्दिक प्रसन्न व उत्तेजित होऊँगा।

45. मैं अपनी मातृ भाषा या शैली के अलावा दूसरे संस्कारों व भाषा व जीवन शैली को आसानी से अपना सकता हूँ और अपनी इस योग्यता को विदेशों में सेवा करने के लिए इस्तेमाल करूँगा।

46. मैं हमेशा मसीही सिद्धान्तों पर दृढ़ता से बोलता रहूँगा चाहे मेरी बातें प्रसिद्ध न हों या लोग कहें कि मेरी मानसिकता क्षीण है।

47. किसी व्यक्ति को यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता ग्रहण कराने में आमन्त्रण देना मुझे सहज लगता है।

48. मैं प्रतिदिन लगभग आधा घण्टा दूसरों के लिए प्रार्थना करता और परमेश्वर से मेरी प्रार्थनाओं के जवाब हेतु विश्वास करता हूँ।

49. मैं लोगों को नियमित लक्ष्यों/ज़िम्मेदारियों से मुक्त कराने में आनन्दित होता हूँ ताकि वह लोग खास कार्यों को पूरा कर सकें।

50. मैं कलीसिया के लिए मुख्य कार्यों को पूरा करने के लिए दूसरों से सहायता मांगने में बुरा नहीं मानता।

51. हमारा घर अधिकतर पार्टियों व सामाजिक गतिविधियों के लिए इस्तेमाल होता है।

52. मैं कार्यों को समय पर पूरा करने हेतु भरोसेमन्द व्यक्ति हूँ, और इस बात के लिए मुझे ज़्यादा प्रशंसा और धन्यवाद की आवश्यकता नहीं है।

53. मैं आसानी से मुख्य ज़िम्मेदारियों को दूसरों में बाँट देता हूँ।

54. आत्मिक जटिल मामलों में मैं भले और बुरे में अन्तर को पहचान लेता हूँ जो दूसरों की समझ में नहीं आता।

55. मैं अधिकतर ऐसे कार्यों को करने हेतु कदम उठाता हूँ जो दूसरे नहीं कर सकते, और उनमें सामान्यत: मुझे सफलता मिलती है।

56. मैं विश्वास करता हूँ कि मैं क्वायर में गा सकता हूँ और अराधना सभा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन सकता हूँ।

57. जब अराधना में लोग अन्यान्य भाषा में गीत गाते व प्रार्थना करते हैं तो मुझे बहुत अच्छा लगता है।

58. परमेश्वर ने मुझे दूसरों के जीवन में खास चमत्कारों को प्रगट करने के लिए खास रूप से इस्तेमाल किया है।

59. मैं चर्च की गतिविधियों के लिए पोस्टर बनाना तथा सजाबट करना पसन्द करूंगा।

60. मेरे विश्वास के द्वारा परमेश्वर ने लोगों को चंगा किया है।

61. परमेश्वर ने मुझे मेरी ज़रूरत से बढ़कर पैसा कमाने की योग्यता दी है ताकि मैं हर्ष के साथ उसे चर्च या मिशन के लिए दे सकूँ।

62. यदि मुझे किसी चीज़ को देना भी पड़े, परन्तु ज़रूरतमन्दों के लिए मुझसे जो बन पड़ता है वह मैं करता हूँ।

63. जब लोगों को कुछ समझ में नहीं आता तो उस समय वह मेरी सलाह माँगते हैं।

64. मुझमें किसी विषय को समझने या किसी प्रश्न के जवाब को विभिन्न स्रोतों से ढूंढ़ निकालने की एक खास योग्यता है।

65. मैं दूसरों को उनको बेहतर बनाने हेतू चुनौति देने की ज़रूरत को महसूस करता हूँ, विशेषकर उनकी आत्मिक बढ़ौतरी के क्षेत्र में उन पर बिना दोष लगाये हुए ।

66. जब मैं लोगों को वचन से शिक्षा देता हूँ तो लोग उसे पसन्द करते हैं।

67. मैं लोगों की आवश्यकता की पूर्ती हेतु अपने खाली समय को देना पसन्द करता हूँ।

68. दूसरे मसीही लोग बिना सवाल किये ही मेरी सलाह को स्वीकार कर लेते हैं।

69. मैं विदेशों में जाकर, जिनकी भाषा, जीवन की शैली व संस्कृति मेरी मातृ-भाषा या संस्कृति से अलग है, सुसमाचार प्रस्तुत करना पसन्द करूँगा।

70. मुझे ऐसी ज़रूरत महसूस होती है कि बाइबल के संदेशों को लोगों में प्रचार किया जाना चाहिए ताकि वह समझ सकें कि परमेश्वर उनसे क्या अपेक्षा रखता है।

71. जब भी मुझे अवसर मिलता है मैं अपने दोस्तों को यीशु के लिए जीतता हूँ।

72. मैं विश्वास करता हूँ कि प्रार्थना ही सबसे महत्वपूर्ण कार्य है जो एक मसीही कर सकता है।

73. मैं कलीसिया के लिए टाइपिंग, भरना, रंग करना, माली का काम करना या किसी भी कार्य को करना पसन्द करूँगा जिससे कलीसिया की सहायता हो सके।

74. किसी खास लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मैं एक दल का प्रबन्ध व अगुवाई कर सकता हूँ।

75. मैं चाहूँगा कि मेरा घर कलीसिया के सदस्यों तथा आगन्तुकों द्वारा पहचाना जाये और भरा रहे।

76. जब भी मुझे ऐसा काम दिखता है जो पूरा होना बाकि है, मैं तुरन्त ही आगे बढ़कर उस कार्य को पूरा करता हूँ।

77. मैं दूसरों के भीतर गुणों और वरदानों को पहचानने में तथा उन्हें एक प्रभावशाली सेवकाई में सहायता करने में सक्षम हूँ।

78. लोग आत्मिक सच्चाईयों व गलतियों के बीच भिन्नता पता करने के लिए मेरे पास आते हैं।

79. यद्यपि सारी बातें खराब नज़र आयें, तब पर भी मैं उज्ज्वल भविष्य के लिए परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर भरोसा करता हूँ।

80. मुजे गीत गाना अच्छा लगता है तथा लोग कहते हैं कि मेरी आवाज़ अच्छी है।

81. जब कोई व्यक्ति अन्यान्य भाषा में बातचीत करता है तब पवित्र आत्मा मुझे सटीक अनुवाद प्रदान करता है।

82. परमेश्वर ने मेरी प्रार्थनाओं को आलौकिक रूप से इतना आशीषित किया है कि असम्भव परिस्तितियों में भी हमें अच्छे परिणाम प्राप्त हुए हैं।

83. मुझे लोगों के लिए कुछ बनाने के द्वारा लोगों की मदद करने में अच्छा महसूस होता है।

84. मुझे शारीरिक तथा भावनात्मक रूप से बीमार लोगों की चंगाई हेतू प्रार्थना करना अच्छा लगता है ताकि परमेश्वर उन्हें चंगा कर सके।

85. मैं कलीसिया में दान तथा ज़रूरतों के लिए सहायता में कमी करने को अपनी बेइज़्ज़ती समझूँगा।

86. जब मैं ऐसे लोगों के बारे में सुनता हूँ जो नौकरी हीन हैं तथा अपने बिल भुगतान नहीं कर सकते, तो मैं उनकी हर संभव सहायता करता हूँ।

87. परमेश्वर व्यवहारिक परिस्थितियों में, मुझे बाइबल के सत्यों का इस्तेमाल करने में सहायता करता है।

88. मैं स्वयं ही बाइबल के कठिन सत्यों व सिद्धान्तों को पहचान सकता हूँ तथा आनन्द मनाता हूँ।

89. लोग अपनी सारी बातें जो वह दूसरों से नहीं कह पाते मुझे बता देते हैं और उनके अनुसार मेरे साथ बात करना उन्हें सहज लगता है।

90. मैं बाइबल के अध्यायों को लोगों में बाँटने के लिए, तथा अपने विचारों में अत्यधिक व्यवस्थित हूँ।

91. मैं लोगों के साथ काम करने में तथा उन्हें वह व्यक्ति बनाने में सहायता करना चाहता हूँ जो वह परमेश्वर के लिए सर्वोत्तम बन सकते हैं।

92. मैं संसार भर में एक आत्मिक अधिकारी के रूप में स्वीकृत हूँ।

93. मैं विदेशों में जाकर सुसमाचार सुनाना पसन्द करूँगा।

94. मैं रोज़मर्रा की जिन्दगी में बाइबल के सिद्धान्तों का इस्तेमाल करना पसन्द करूँगा।

95. मैं लोगों को एक मसीही कैसे बनते हैं तथा किस तरह से हम यीशु मसीह को अपने जीवन में आमन्त्रित करते हैं बताना पसन्द करूँगा।

96. दूसरों के प्रति की गयी बहुत सी प्रार्थनाओं का परमेश्वर ने मुझे उत्तर दिया है।

97. मैं लोगों के कार्यों को पूरा करने में उनकी सहायता करता हूँ तथा मुझे किसी शबाशी की आवश्यकता नहीं है।

98. लोग मेरे विचारों का आदर करते व मेरी सलाह को मानते हैं।

99. मैं महसूस करता हूँ कि मेरे घर में आये मेहमानों का ख्याल रखना मेरे लिए सबसे बड़ी सेवकाई है।

100. मैं लोगों की किसी भी प्रकार की ज़रूरत में सहायता करता हूँ और ऐसा करने से मुझे सन्तुष्टि मिलती है।

101. दबावपूर्ण परिस्थितियों में भी बहुत आराम से मैं बड़े निर्णयों को ले सकता हूँ।

102. मैं पहचान सकता हूँ कि कब एक वक्ता परमेश्वर की आत्मा में लोकर बोल रहा है या वह अपनी महिमा के लिए कर रहा है।

103. मैं ज़्यादातर प्रार्थना के द्वारा अपने विश्वास का अभ्यास करता हूँ तथा परमेश्वर मेरी प्रार्थनाओं का जवाब देते हैं।

104. मैं विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर मुझे एक अराधना दल में या गीतों के संदेश द्वारा इस्तेमाल कर सकता है।

105. मैंने अन्यान्य भाषा में बोला तथा एक परिपक्व व्यक्ति ने उसका अनुवाद किया जिससे सुनने वालों को बहुत आशीष प्राप्त हुई।

106. परमेश्वर अपने राज्य की महिमा के लिए चमत्कारों के द्वारा मुझे इस्तेमाल करता है।

107. लोग कहते हैं कि परमेश्वर ने मेरे हाथों को अभिषिक्त किया है।

108. लोग अपनी शारीरिक आवश्यकताओं के लिए प्रार्थना करवाने हेतु मुजे ढूँढ़ते हैं।

109. मैं जब लोगों को पैसे से मदद करता हूँ तो बदले में कुछ चाह नहीं रखता, और जितना ज़्यादा हो सके करता हूँ।

110. कीर्ति रहित तथा जिनका कोई वजूद नहीं है, ऐसे लोगों के साथ में काम करना मुझे अच्छा लगता है।

111. लोग अधिकतर जो मैं उनसे कहता हूँ-करते हैं, और मेरी सलाह को याद रखते हैं।

112. लोग मेरे द्वारा दिये गये वचन के प्रकाशन तथा उसके इस्तेमाल के द्वारा कायल हो जाते हैं।

113. मैं निराश लोगों को उत्साहित करना पसन्द करता हूँ, यहाँ तक कई बार लोगों में अधिक समय बिताने की वजह से मुझे बहुत सी ज़िम्मेदारियों को नज़रअन्दाज करना पड़ता है।

114. जब भी मुझे सण्डे स्कूल में परमेश्वर के वचन को बाँटने या रोज़मर्रा की जिन्दगी में काम आने वाले वचनों की व्याख्या करने का अवसर मिलता है तो मैं उत्तेजित हो जाता हूँ।

115. जो लोग भटककर परमेश्वर से दूर हो गये हैं उन लोगों को पुन: यीशु मसीह के साथ सम्बन्ध बनाने में मैं उनकी सहायता करता हूँ।

116. मैं सुसमाचार सुनाना तथा जहाँ पर चर्चेज़ नहीं हैं उन स्थानों में नये मसीही समूहों को प्रारम्भ करना पसन्द करूँगा।

117. मेरे जीवन में जाति-भाव जैसी कोई बात नहीं है और जो लोग रंग रूप में मुझसे अलग हैं मैं उनका आदर करता हूँ।

118. जब मैं सार्वजनिक तौर पर संदेश प्रचार करता हूँ तो मैं परमेश्वर की आशीषों, सामर्थ तथा अभिषेक को महसूस करता हूँ।

119. मुझे यह इच्छा है कि यीशु मसीह के द्वारा मैं गैर-मसीहियों की उद्धार प्राप्त करने में सहायता कर सकूँ।

120. कलीसिया के भीतर प्रार्थना मेरी सबसे पसन्दीदा सेवकाई है और मैं अपना ज़्यादातर समय प्रार्थना में व्यतीत करता हूँ।

आत्मिक वरदान खोज की अंक तालिका

0-4 तक किसी एक मूल्य का चयन करें जो दर्शाता है कि यह वाक्य आपके जीवन में सच है

0 – **बिल्कुल भी नहीं**
1 – **थोड़ा**
2 – **साधारणतया**
3 – **अत्यन्त**
4 – **दृढ़ता से**

उत्तर					योग	पंक्ति	वरदान
1.	25.	49.	73.	97.		A	
2.	26.	50.	74.	98.		B	
3.	27.	51.	75.	99.		C	
4.	28.	52.	76.	100		D	
5.	29.	53.	77.	101.		E	
6.	30.	54.	78.	102.		F	
7.	31.	55.	79.	103.		G	
8.	32.	56.	80.	104.		H	
9.	33.	57.	81.	105.		I	
10.	34.	58.	82.	106.		J	
11.	35.	59.	83.	107.		K	
12.	36.	60.	84.	108.		L	
13.	37.	61.	85.	109.		M	
14.	38.	62.	86.	110.		N	
15.	39.	63.	87.	111.		O	
16.	40.	64.	88.	112.		P	
17.	41.	65.	89.	113.		Q	
18.	42.	66.	90.	114.		R	
19.	43.	67.	91.	115.		S	
20.	44.	68.	92.	116.		T	
21.	45.	69.	93.	117.		U	
22.	46.	70.	94.	118.		V	
23.	47.	71.	95.	119.		W	
24.	48.	72.	96.	120.		X	

मुख्य वरदान

A. सहायताएं
B. नेतृत्व (अगुवाई)
C. मेज़बानी
D. सेवा
E. प्रशासन
F. परखना
G. विश्वास
H. संगीत
I. भाषाएं (अन्य भाषाएं)
J. आश्चर्यकर्म
K. शिल्पकारिता
L. चंगाई
M. देना
N. दया
O. बुद्धि
P. ज्ञान
Q. उत्साहवर्द्धक उपदेश
R. शिक्षा
S. अगुवा/चरवाहा
T. प्रेरिताई
U. मिशनरी
V. भविष्यवाणी
W. सुसमाचार प्रचार
X. मध्यस्थता

वरदानों की परिभाषाएं

निम्नलिखित बातें आत्मिक वरदानों की परिभाषाओं को प्रस्तुत करती हैं। यद्यपि यह अटल तथा अन्तिम परिभाषाएं नहीं हैं, फिर भी यह परिभाषाएं और सहायक बाइबल अध्याय आत्मिक वरदान प्रश्न-सूची में वर्णित वरदानों की विशेषताओं की व्याख्या करने में सहायक है।

A. **सहायताएं**- किसी व्यक्ति के जीवन तथा मसीह की देह में सेवकाई की प्रतिभाओं को खोजने की योग्यता, ताकि उन्हें इस योग्य बनाया जा सके कि वह अपने आत्मिक वरदानों की प्रभावशालिता को बढ़ा सकें।
1 कुरिन्थियों 12:28   मरकुस 15:40-41
प्रेरितों के काम 9:36   रोमियों 16:1-2

B. **नेतृत्व**- परमेश्वर के उद्देश्य में उसकी इच्छानुरूप भविष्य के लिए लक्ष्य निर्धारित करने तथा इन लक्ष्यों को दूसरों के साथ इस प्रकार संचालित करने की योग्यता कि वह स्वैच्छिक व एक मन होकर परमेश्वर की महिमा के लिए उन लक्ष्यों को मिलकर पूरा करे।
रोमियों 12:8   प्रेरितों के काम 15:7-11
1 तिमुथियुस 5:17   इब्रानियों 13:17

C. **मेज़बानी**- लोगों के लिए आसरा उपलब्ध कराने तथा गर्मजोशी से ऐसे लोगों का स्वागत करने की योग्यता, जिन्हें भोजन और शरण की आवश्यकता है।
1 पतरस 4:9   प्रेरितों के काम 16:14-15   रोमियों 12:9-13
रोमियों 16:23   इब्रानियों 13:1-2

D. **सेवा**- परमेश्वर के कार्यों से जुड़ी हुई अप्राप्त आवश्यकताओं को पहचानने तथा उपलब्ध साधनों की सहायता से उन आवश्यकताओं को प्राप्त करने तथा इच्छानुसार परिणामों का निर्माण करने में सहायता करने की योग्यता।
रोमियों 12:7   प्रेरितों के काम 6:1-7
गलतियों 6:2   2 तीमुथियुस 1:16-18

E. **प्रशासन**- मसीह की देह में तुरन्त दीर्घकालिक लक्ष्यों को समझने तथा उन लक्ष्यों के प्रभावशाली सम्पादन हेतु योजना निर्माण करने की योग्यता।
1 कुरिन्थियों 12:28   प्रेरितों के काम 6:1-7

F. **परख**- पूरी दृढ़ता के साथ यह जानने की योग्यता कि वास्तव में विशेष व्यवहार परमेश्वर की ओर से है, दिव्य है, मानवीय है या फिर शैतान की ओर से है। इस वरदान का उद्देश्य कलीसिया में घुसपैठ करने वालों की झूठी शिक्षाओं से उत्पन्न संदेह को दूर करना है।
1 कुरिन्थियों 12:10   प्रेरितों के काम 5:1-11
प्रेरितों के काम 16:16-18   1 पतरस 4:1-6

G. **विश्वास**- असाधारण विश्वास के साथ परमेश्वर की इच्छा और उद्देश्य को पहचानने और विश्वासियों की देह को परमेश्वर के द्वारा किये गये वायदों पर कब्ज़ा करने में प्रोत्साहित करने की योग्यता।
1 कुरिन्थियों 12:9   रोमियों 4:18-21   इब्रानियों 11

H. **संगीत**- संगीत के माध्यम से परमेश्वर की आराधना में दूसरों की अगुवाई करने की विशेष योग्यता। कुछ लोग इसे स्वाभाविक प्रतिभा मान सकते हैं, किन्तु यह भी परमेश्वर के दिये गये वरदान हैं।
भजन संहिता 98   भजन संहिता 92:1-4   1 इतिहास 16:4-7

I. **भाषा/अन्य भाषाएं**- दिव्य अभिषिक्त सुसमाचार को ऐसी भाषा में बोलने की योग्यता जो कभी सीखी नहीं गयी किन्तु सुनने वालों पर ज्ञात हो। इसका उद्देश्य धर्मोपदेश का साधन बनना है जो सुसमाचार प्रचार के उद्देश्य के लिए प्रयोग में लाया जा सके।
1 कुरिन्थियों 12:10   1 कुरिन्थियों 14   मरकुस 16:17
प्रेरितों के काम 2:1-13   प्रेरितों के काम 10:44-46   प्रेरितों के काम 19:1-7

J. **चमत्कार**- एक मानवीय मध्यस्थ के रूप में सेवा करने की योग्यता जिसके द्वारा परमेश्वर एक कार्य करना पसन्द करे जो दूसरों के द्वारा महसूस किये जायें तथा दूसरों के जीवन में असाधारण रूप से कार्य कर सकें।
1 कुरिन्थियों 12:10,28   प्रेरितों के काम 9:36-42
प्रेरितों के काम 20:7-12   रोमियों 15:18-19

K. **शिल्पकारिता**- कला और रचनाओं के माध्यम से परमेश्वर की आराधना को प्रेरित करने और मसीह की देह की सेवकाई करने की विशेष योग्यता। कुछ इसे स्वाभाविक प्रतिभा मान सकते हैं किन्तु यह भी परमेश्वर की ओर से वरदान हैं।
1 राजा 7:13-51

L. **चंगाई**- मानवीय मध्यस्थता के रूप सेवा करने की योग्यता है जिसके द्वारा परमेश्वर की चंगाई की सामर्थ्य अन्य व्यक्ति की शारीरिक और भावनात्मक आवश्यकताओं पर लागू होती है।
1 कुरिन्थियों 12:9,28   प्रेरितों के काम 3:1-10
प्रेरितों के काम 5:12-16   प्रेरितों के काम 9:32-35

M. **देना**- प्रभु परमेश्वर के कार्यों के लिए उदारता और प्रसन्नता के साथ भौतिक संसाधनों का अंशदान करने की योग्यता।
रोमियों 12:8   मरकुस 12:41-44
2 कुरिन्थियों 8:1-15   2 कुरिन्थियों 9:2-8

N. **दया**– ऐसे व्यक्ति विशेष के लिए जो शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक समस्याओं से निराश हो, सहानुभूति और करुणा को महसूस करने की योग्यता और उस करुणा को आनन्दपूर्वक किये गये कार्यों को बताना और कष्टों में सान्त्वना देने के लिए मसीह के प्रेम का वर्णन करना।

रोमियों 12:8 लूका 10:25–35

O. **बुद्धि**– आत्मिक सच्चाई को लेकर एक खासतौर पर मेल खाते हुए तरीके से किसी मुद्दे में उसकी जानकारी इस्तेमाल करना तथा कठिन समय में प्राप्त जानकारियों के आधार पर सही निर्णय लेना ही बुद्धिमानी है।

1 कुरिन्थियों 12:8 प्रेरितों के काम 17:16–34 याकूब 3:13–16

P. **ज्ञान**– वह योग्यता है जिसके तहत खोजना, जाँचना और सूचनाओं को स्पष्ट करना होता है जो देह के स्वास्थ्य तथा बढ़ौत्तरी के लिए आवश्यक है।

1 कुरिन्थियों 12:8 प्रेरितों के काम 5:1–11 कुरन्थियों 2:2–3

Q. **उत्साहवर्द्धन**– परमेश्वर के वचनों द्वारा उत्साह, सान्त्वना, आराम तथा प्रेरणा प्रदान करने की योग्यता जिससे दूसरों को उनके लक्ष्य तथा वह कार्य पूरा करने में सहायता मिले जो परमेश्वर उनसे चाहता है।

रोमियों 12:8 प्रेरितों के काम 14:22
1 तिमुथियस 4:13 इब्रानियों 10:24–25

R. **शिक्षा**– मसीह की देह व स्वास्थ्य को बाइबल सम्बन्धी तार्किक तथा क्रमबद्ध तथा प्रासंगिक शिक्षा व सूचनाएं प्रदान करने की ऐसी योग्यता है जिससे दूसरे सीख सकें।

रोमियों 12:7 1 कुरिन्थियों 12:28 प्रेरितों के काम 18:24–28
प्रेरितों के काम 20:20–21 इफिसियों 4:11–14

S. **पास्टर/चरवाहा**– विश्वासियों के समूह के फायदे के लिए लम्बे समय तक ज़िम्मेदारी उठाने की योग्यता।

इफिसियों 4:11–14 यजेहकेल 34 यूहन्ना 10:1–18
1 तिमुथियुस 3:1–7 1 पतरस 5:1–3

T. **प्रेरित**– अनेकों कलीसियाओं की अगुवाई का अनुमान लगाना तथा उसकी सामान्य ज़िम्मेदारी को लेने की ऐसी योग्यता है, जो आत्मिक क्षेत्रों में असाधारण अधिकार रखता है तथा कलीसियाओं द्वारा उसका यह गुण स्वत: ही पहचाना तथा सराहा जाता है।

1 कुरिन्थियों 12:28 प्रेरितों के काम 15:1–2 2 कुरन्थियों 12:12
गलातियों 2:7–10 इफिसियों 3:1–9 इफिसियों 4:11–14

U. **मिशनरी**– परमेश्वर मसीह की देह के कुछ अंगों को ऐसी योग्यता प्रदान करता है कि वह अपने वरदानों के साथ दूसरी संस्कृति में सेवा निभाते हैं।

मत्ती 28:18–20 प्रेरितों के काम 1:8 इफिसियों 3:7–12
प्रेरितों के काम 15:3–4

V. **भविष्यवाणी**– यह ईश्वरीय अभिषेक के साथ परमेश्वर के वचनों को एलान करने की ऐसी योग्यता है, जो सुनने वालों को इस कदर कायल करती है कि सुनने वाले पहचान जाते हैं कि वह परमेश्वर की वाणी है और उन्हें उसके अनुसार कुछ करना चाहिए।

1 कुरिन्थियों 12:10 प्रेरितों के काम 2:37–40 प्रेरितों के काम 7:51–54
1 कुरिन्थियों 14:1,3,29

W. **सुसमाचार प्रचार**– सुसमाचार प्रचार करना एक ऐसी योग्यता है जिसके तहत गैर मसीही लोगों में इस तरह से वचन को प्रचार किया जाता है कि पुरुष/स्त्री यीशु के चेले तथा मसीह को देह के एक ज़िम्मेदार अंग बन जाते हैं।

इफिसियों 4:11–14 प्रेरितों के काम 8:5–6; 26–40
प्रेरितों के काम 14:21 प्रेरितों के काम 21:8

X. **मध्यस्थता**– यह साधारण मसीहियों के स्तर से बढ़कर, लम्बे समय तक, विशेष प्रार्थनाओं के जवाब पाने हेतू नियमित रूप से प्रार्थना करने की योग्यता है।

इब्रानियों 11:6 1 यूहन्ना 5:14,15 रोमियों 8:26

अपने आत्मिक वरदानों को खोजना

आपने अपने आत्मिक वरदानों की खोज करने वाली प्रक्रिया को अभी प्रारम्भ ही किया है। जैसे-जैसे आप दिये गये प्रश्नों से होकर गुज़रते हैं तो यह परखने का प्रयास करें कि कौन सा आपका वरदान है या कौन सा नहीं है। इस कार्य को करने के लिए निम्नलिखित पाँच-चरणों की प्रणाली को देखें।

1. **सम्भवताओं का बखान करें:** आत्मिक वरदानों से सम्बन्धित बाइबल के तीन कुँजी अध्यायों को पढ़ें (1 कुरिन्थियों 12, रोमियों 12, इफिसियों 4)। सीखें कि वरदान क्या हैं कैसे उनमें निखार आता है तथा किस तरह से वह मसीह की देह में कार्य करते हैं, ताकि आपके पास कुछ मज़बूत आधार हो जिससे आप आगे बढ़ सकें।
2. **जितने ज़्यादा वरदानों पर प्रयोग संभव हो करें:** आत्मिक वरदानों की जाँच जो आपने अभी-अभी खत्म की है उसने आपकी विभिन्न वरदानों का प्रयोग करने में सहायता की है। जैसे-जैसे आप प्रश्नों व खोज़ से होकर गुज़रे, आपकी भावनाएं, प्रतिउत्तर, तथा वरदान के स्वरूप की जाँच हो सकी। अब आपको उस खास गुण /वरदान पर ध्यान देने की ज़रूरत है जो आपको आकलन के दौरान पता चला। जब तक आप उस वरदान का इस्तेमाल नहीं करते जो आपको इस जाँच के बाद पता चला, तो आपको यह जानने में अत्यधिक कठिनाई होगी कि आपके पास वह वरदान है भी या नहीं। अपने को कलीसिया की सेवकाइयों में शामिल करें, जहाँ आप इन वरदानों का इस्तेमाल कर सकते हैं।
3. **अपनी भावनाओं को जाँचें:** क्योंकि परमेश्वर ने देह को एक साथ जोड़ा है इसलिए प्रत्येक अंग जब उचित तरीके से कार्य करेगा तो आपको भरपूरी महसूस होगी। अत: यदि आप अपने वरदान का प्रयोग करने का प्रयास करते हैं तो इसका अर्थ है कि आपमें वह वरदान है। परन्तु आपको यदि उस वरदान से सम्बन्धित गतिविधियां पसन्द नहीं आती हैं तो यह इस बात का स्पष्ट लक्षण है कि वह वरदान आपमें नहीं है।
4. **अपनी प्रभावशालिता का मूल्यांकन करें:** क्योंकि आत्मिक वरदान दूसरों के फायदे के लिए है इसलिए आपको सदैव सकारात्मक परिणामों की अपेक्षा करनी चाहिए। यदि आप किसी खास वरदान का प्रयोग करते हैं और कोई सकारात्मक परिणाम नहीं मिलता है तो हो सकता है कि वह वरदान आपके लिए नहीं है। परन्तु यह भी हो सकता है कि आपने उस वरदान का इस्तेमाल ठीक ढंग से न किया हो या आपको इसका इस्तेमाल करना सीखने में समय लगेगा। जब आप इसका मूल्याँकन कर रहे होते हैं तो परमेश्वर तथा खुद के साथ ईमानदार होने के लिए साहस देने हेतू प्रार्थना करें।
5. **देह से पुष्टिकरण की अपेक्षा:** आप अपने आप ही वरदान को, खोज, बढ़ा तथा इस्तेमाल नहीं कर सकते। वरदान देह के दूसरे अंगों को मज़बूत करने हेतू दिये गये हैं। यदि आपके पास कोई वरदान है तो दूसरे मसीही उसे पहचानेंगे और पुष्टि करेंगे। यदि आपको ऐसा लगता है कि आपके पास एक वरदान है परन्तु कोई दूसरा आपके साथ सहमत नहीं होता, तब आपको अपने आप उसकी पुन: गहन मूल्याँकन या जाँच करनी चाहिए।

जीवन समूह अगुवे का समर्पण-पत्र

मैं ______________________' परमेश्वर के सम्मुख मसीह व उसकी कलीसिया की सेवा करने का समर्पण करता हूँ। मैं सेवक अगुवों के समान अपने चेलों का ख्याल रखूँगा व प्रेम से संसार तक सुसमाचार पहुँचाऊँगा।

पता: ______________________

______________________ फोन: ______________________

ई-मेल: ______________________

यदि मैं अपनी कलीसिया के लिए एक अगुवा घोषित होता हूँ तो मैं समर्पण करता हूँ कि-

________ प्रतिदिन प्रार्थना करूँगा,
________ बाइबल अनुसार विश्वास से जीऊँगा,
________ पवित्र आत्मा को अपने जीवन पर नियन्त्रण दूँगा,
________ निरन्तर प्रभु का कार्य करूँगा,
________ कलीसिया व अगुवों के प्रति वफादार रहूँगा,
________ नियमित रूप से अगुवों की सभा व प्रशिक्षण में भाग लूँगा।

उपलब्धियों का प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि

____

ने सफलतापूर्वक

APPRENTICE LEADER TRAINING

नवअगुवों का प्रशिक्षण

दिनाँक ____________ को सम्पन्न किया।

____

प्रशिक्षक